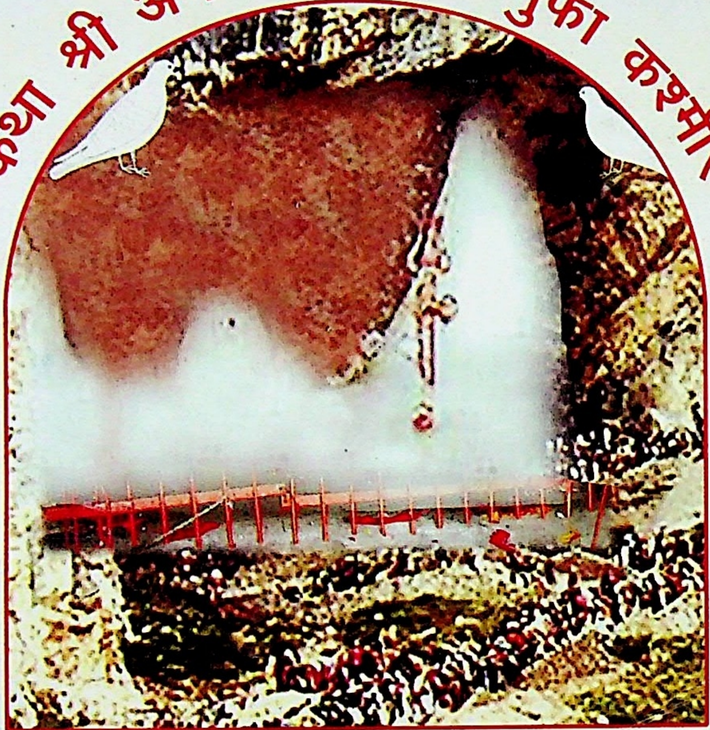
ॐ

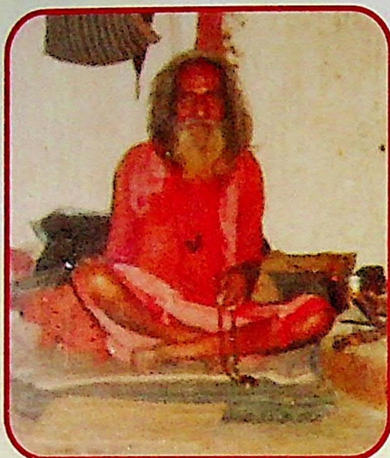
ॐ नमः शिवायः

ॐ श्री परमात्मने नमः

कथा श्री अमर नाथ पीठ गुफा कश्मीर



जय श्री अमर नाथ बर्फानी बाबा जटाधारी।
शरणागत के करते कार्य 'विष्णु' पूर्ण त्रिपुरारी।।



पूज्य पिता बाबा चरण गिरि थे करते सब का सम्मान।
जिन की आपार कृपा से 'विष्णु' पाया सब ज्ञान।।

लेखक : ''विष्णु दास विष्णु''
उपनाम वि.डी. मैंगी रिटायर्ड एस.पी.

पता : मकान नं॰ 245-ए,
गली नं॰ 9 शक्ति नगर जम्मू (तवी)
जे॰ एण्ड के॰ - 180001

दूरभाष :- 2581954, 9419300327

सं॰ अप्रैल 2009
कथा श्री अमर नाथ पीठ गुफा कश्मीर - 1500
सं॰ जनवरी 2008
विष्णुभजनावलि - 1000
सं॰ फरवरी 2007
अमृतकोष - 2000

मुद्रक :- जंडियाल प्रिंटिंग प्रैस
मोहिन्दर नगर, कनाल रोड़, जम्मू।

ॐ नमः शिवायः



प्रथम ध्यान श्री गजकरण का करे विघ्न का नाश।
ज्यों रवि करत है अन्धाकार से प्रकाश।।

'विष्णु'

कथा श्री अमर नाथ पीठ गुफा
कश्मीर

मूल्य :- 20/-

ॐ नमः शिवायः

प्रार्थना

रजतगिरि कान्ति शिवम् त्रिशूल, जटा, गङ्ग. धारी।
अभय मुद्रा, खाल औढ़े 'विष्णु' नमः संकट हारी।।
नील प्रवाल देह शिवम् अङ्ग. भस्म त्रिनेत्र धारी।
गौराँ सदा पूजा करे 'विष्णु' नमः आशुतोष हितकारी।।
सनातन लोक गुरु शिवम् ब्रह्माण्ड स्वामी, प्राणाधारी।
कोटि–कोटि प्रणाम 'विष्णु' शिवम् कल्याण कारी।।
मालाएँ कंठे नागों के पहनें, औढ़ें मृगशाला प्यारी।
वन्दना करूँ त्रिलोचनम् 'विष्णु' सब के जो उद्धारि।।
फल–जल चढ़ाए श्रद्धा से पूजे शिवम् जो नर–नारी।
सुख–शान्ति सदा पाए 'विष्णु' ऐसा विवेक विचारी।।

निवेदक

'विष्णु दास विष्णु'





निवेदन

इस पुस्तक, जो कि जन सेवा के भाव से श्री हरि में आसक्ति रख कर प्राचीन ग्रथों का मथंन करके लिखी गई है, को पढ़ कर भक्त जन दैनिक जीवन में बर्फानी बाबा श्री अमरनाथ जी के द्वारा पवित्र गुफा स्थित कश्मीर में माँ भवानी भगवती पार्वती जी को सुनाई गई अमर कथा व इस तक पहुँचने के मार्ग व दूसरी उपलब्धियों के विषय में जानकारियां प्राप्त कर के लाभ उठा सकते हैं।

मनुष्य शरीर अनित्य है, दो आत्मा को महत्व।
निश्चित समय काल का 'विष्णु' जानो इसका तत्व।।

इस संसार में कोई भी ऐसा प्राणी नहीं जो कह सके कि वह जीवित ही रहेगा। काल का ग्रास नहीं बनेगा। जो चीज़ बनी है, इक दिन टूट ही जाती है, जो फूल खिला है मुरझा ही जाता है, जो जन्मा है उस की मृत्यु अटल है। प्राणी की क्या बात यह संसार भी अनित्य है। काल का समय निश्चित है, टाला नहीं जा सकता। काल किसी से भेद–भाव नहीं रखता, जब जिस की बारी आती है, तब काल उस प्राणी के शरीर से आत्मा को निकाल ले जाता है और नये शरीर की रचना कर के आत्मा को उस के कर्मों के अनुसार उस देह में डाल देता है।

कोहलु के बैल की तरह यदि इस अनित्य संसार के बन्धनों में ही बंधे रहे और कोई उपकार, परोपकार, भक्ति, साधना, तप–यज्ञ, तीर्थ–यात्रा नहीं की तो क्या लाभ। तब

ऐसा ही प्रतीत होगा ज्यों रात को सोने के बाद जब जागो तो किश्ती किनारे पर बंधी की ही बंधी पाओगे। इसलिए काल का भरोसा न कर के मृत्यु को सुखद व मधुर बनाने के लिये और संसार से पार उतरने के लिये जप–तप, दान–पुण्य व्रत–होम, तीर्थ –यात्रा आदि शुभ कर्म अवश्य करने चाहिए।

इस पुस्तक में यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उसे अपनी चेतना की स्लेट से निकाल दें। क्योंकि कार्य करने वाले से त्रुटियां हो ही जाती है और त्रुटियों के प्रति विवेक शील, महापुरूष क्षमा भाव रखते है।

इस पुस्तक के अतिरिक्त मेरे द्वारा लिखित पुस्तकें

१. अमृतकोष,

२. विष्णु भजना बली को भी पढ़ें।

३. कथा श्री अमर नाथ पीठ गुफा कश्मीर

निवेदक

'विष्णु दास विष्णु'

◆◆◆◆



शिव स्तुति

कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता जो ''विष्णु'' त्रैलोकी में विद्यमान।
निराकार, साकार, रक्षक जो शिव उसी को जान।

हे प्रभु! विश्व को उत्पन्न करने वाले (बीज) आप ही हैं। आप ही पालन करने वाले हैं और आप ही समस्त चराचर के संहार करने वाले निराकार, साकार सदा शिव हैं। आप ही संकट के समय में रक्षा करने वाले सदा शिव भोले बाबा श्री अमरनाथ जी हैं, आप को कोटि– कोटि प्रणाम।

विराट विश्व शिव स्वरूप है, शिव सर्वत्र साकार।
शिव दीन दयाल 'विष्णु' शिव ही साक्षात निराकार।।

हे प्रभु! आप ही क्षेत्राधिपति हैं। सारा विश्व आप का ही स्वरूप है। आप ही साकार रूप में सर्व विश्व में व्यापक हैं। आप ही दीनों पर कृपा करने वाले हैं और आप शिव ही निराकार रूप में समस्त सृष्टि में विद्यमान हैं। वही सदा शिव भोले बाबा श्री अमर नाथ जी आप हैं, को कोटि– कोटि प्रणाम।

तीनों लोकों में हर समय जो रहे विद्यमान।
काल से रहित जो 'विष्णु' सदा शिव उसे जान।।

जिस प्रकार जल धाराएँ निरन्तर स्वाभाविक रूप से समुद्र की ओर जा रही हैं और समुद्र में प्रवेश कर रही हैं, उसी प्रकार यह चराचर रूपी संसार मृत्यु रूपी महासागर महाकाल सदा शिव की ओर ही निरन्तर जा रही हैं। यही

सदा शिव महाकालेश्वर हर समय तीनों लोकों में विद्यमान रहते हैं, और उन की ही स्थिति हर समय इस चराचर में और तीनों लोकों में रहती है, वही आप सदा शिव भोले बाबा श्री अमरनाथ जी हैं। आप को कोटि–कोटि प्रणाम।

सनातन लोक गुरु शिव दयालु प्राणाधार।
जग आश्रित इन के 'विष्णु' सदा नमस्कार।।

जो अनादि हैं, नित्य हैं, सनातन हैं जो सारे विश्व के गुरु हैं, जो अविनाशी हैं, जो उपकार करने वाले हैं, जो कण–कण में व्यापक हैं, जो सब के प्राण हैं, और प्रत्येक जीव के प्राणों को प्राण वायु वन कर प्राण स्थिर रखते हैं, जो दया के सागर हैं, जो कृपालु हैं, जो जगत की उत्पति के मूल कारण हैं, यह सारा संसार जिन की शरणागत में है, सेवक है, उन्हीं भोले बाबा सदा शिव श्री अमरनाथ जी को कोटि–कोटि प्रणाम।

'विष्णु दास विष्णु'



सृष्टि रचना

भोले शंकर ही ईश 'विष्णु' अमर नाथ कहलाएँ।
इन के संकेत से ब्रह्माण्ड चले सभी से पूजे जाएँ।।

श्री अमरनाथ का अर्थ है, अविनाशी, अजर–अमर, आदिम, अजन्मा भगवान सदाशिव। यही देवताओं के देव, महादेव हैं। यही सर्व व्यापी होने पर भी चर्मचक्षुओं से नहीं दिखाई देते हैं। इन की ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, कुवेर, यम, देव, पिशाच, गंधर्व आदि सभी पूजा करते हैं। ऋषि–मुनि जिन के गुणों का गान करते हुए नहीं थकते हैं। सूर्य–चाँद, सितारे व यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड जिन के अधीन रह कर क्रम अनुसार अपना–अपना कार्य निरन्तर करते रहते हैं।

सृष्टि के आदि में तो द्वन्द्ध नहीं था। पहले एकता ही एकता थी। उस एकता से अनेकता कैसे उत्पन्न हुई? एकता में से अनेकता उत्पन्न हो ही नहीं सकती यदि उसे कोई उत्पन्न करने वाला न हो। उसके आदि अन्त (+-) का भी कोई पता न था। मृत्यु व जीवन भी नहीं था। दिन–रात को विभाजन करने वाला सूर्य भी नहीं था। अन्धकार ही अन्धकार था।

शिव ही अमर नाथ हैं 'विष्णु' जग में यही सत्य।
शंका इस में जो करें, उन की शंका असत्य।।

किसी कर्त्ता के बिना कार्य की सत्ता सम्भव ही नहीं। भगवान शिव ही इस सृष्टि का मूल कारण हैं। व्योम हैं। सृष्टि के पूर्व काल में न स्त्री थी न पुरूष था और न ही

नपुंसक था। परन्तु जब सृष्टि की रचना करनी होती है, तव पूर्व–वत यह भेद बुद्धि के द्वारा उत्पन्न हो जाता है, कि क्या नहीं है और पृथक कौन सी वस्तु है? निश्चित रूप से यह जान लेना चाहिए कि सब कुछ (व्योम) सदा शिव ही हैं। इस सृष्टि के पूर्व सर्वत्र सदा शिव व उनकी माया ही व्यापक थी। भगवान भोले नाथ ही सदा शिव हैं, यही श्री अमर नाथ जी हैं। यही अजन्में, सच्चिदानंद विश्व रूप हैं । यह माया वादी जगत उन के द्वारा ही रचा गया है। यह जगत जिस को हम सभी सत्य –सुंदर मान कर इस में फंसे हैं, उन्हीं श्री हरि सदा शिव के द्वारा चलाया गया, रचा गया यह जग चक्र नियमानुसार चल रहा है। उन श्री हरि सदा शिव जी की शक्ति के बिना कुछ भी सम्भव नहीं। यह सम्पूर्ण जगत उन्हीं के आश्रित है और उन की ही सत्ता से टिका हुआ है। आदि–अन्त तक उन श्री हरि भोले बाबा श्री अमर नाथ जी का ही अस्तित्व है। आदि में वह सुप्त, शान्त व निश्चल थे। वह राजस गुण में आकर अपने अकेले पन को दूर करने के लिये दूसरों की कामना करने लगे और कामना–संस्कार से ही स्थूल विश्व का बीज रोपण हुआ।

सृष्टि के पूर्व न सत्त् था, न असत् था, न रज था, न तम। इस से परे जो था उसका कोई मापहीन नहीं था। उस समय न मृत्यु थी, न अमृत (जीवन), न रात्रि थी, न दिन था, वह जो विद्यमान था आकार रहित था और अदृश्य शक्ति के रूप में विद्यमान था और इस समस्त सृष्टि का, प्रकृति का भक्षण कर अपने पास रखे हुए था। इन सब बातों को कहने बाला, बोलने वाला व बतलाने वाला भी कोई नहीं था। यह सृष्टि कहाँ से आई इस को किस ने

उत्पन्न किया इसे भी बतलाने वाला कोई नहीं था। सर्व प्रथम केवल शून्य ही था। महा काश भी शून्य था सदा शिव के अनन्त नामों में से उन का एक नाम शून्य भी है। तब वही अकेला शून्य था। उस का कोई आदि अन्त नहीं था। जिस स्थान पर प्रकाश न हो कुछ दिखाई न दे शून्य का अनुभव हो अंधकार कहलाता है और अंधकार का एक नाम कालिमा है और कालिमा ही काल है व काल ही सदाशिव हैं। सृष्टि के पूर्व में सदा शिव भोले बाबा श्री अमर नाथ जी ही थे और कोई क्रिया न थी। यह सारी सृष्टि व सारा चराचर आदि उनके ही व्योम से उत्पन्न हुआ और अन्त में भी उन में ही समा जाता है।

क्षीर सागर में शयन करने वाले जिन विष्णु व लक्ष्मी जी के रूप का आदि ग्रथों में वर्णन किया गया है, वही अर्द्धनारिश्वर सदा शिव हैं और उस समस्त ब्रह्मण्ड के संचालित करता हैं। यही सदा शिव उस समस्त ब्रह्माण्ड को नियंत्रिण में रखते हैं और प्रल्य काल में अपने में ही लपेट कर लीन कर लेते हैं, जिस प्रकार शान्त समुद्र जब खेलने की इच्छा करता है, तब अपने को अनके तरगों, बर्फ, बुदबुदे और फेनों आदि के रूप में अभिव्यक्त कर लेता है और फिर इस के साथ खेल–खेलना प्रारम्भ कर देता है। इस से यही समझ में आता है कि परमात्मा सदा शिव जी जब सृष्टि रचना की कामना करते हैं, और कामनाओं के अनुसार प्रेम का खेल–खेलने लगते है। यह इन की एक अनोखी लीला है, और इस लीला के अतिरिक्त उन सदा शिव की सृष्टि रचना का दूसरा कोई प्रयोजन नहीं है।

जिस प्रकार पृथ्वी का स्वभाव गन्ध है, प्रेम है, जल का स्वभाव स्वाद, वायु का स्वभाव स्पर्श वैसे ही परमात्मा का स्वभाव प्रेम की लीला है। यह ब्रह्माण्ड जिस में भूत, वर्तमान और भविष्य की समस्त वस्तुएँ दीख पढ़ती हैं भोले बाबा सदा शिव जी का स्थूल से भी स्थूल शरीर है। वह अणु से भी अणु और महान् से भी महान् हैं। सदा शिव ही आदि हैं, सदा शिव ही सब कुछ हैं।

स्थूल शिव मूर्ति 'विष्णु' लिङ्ग. कहलाए।
ब्रह्माण्ड है यही ब्रह्मा -विष्णु भी न पार पाए।

शिव पुराण के अनुसार जब शिव जी सृष्टि रचना की इच्छा करते हैं तब कल्प के आदि में तत्वों की रचन करके विष्णु व लक्ष्मी रूप धारण करके हिम परिवर्तित जलाशय में शयन क्रीड़ा करते हैं और इस प्रकार जब यह क्रीड़ा की तब श्री विष्णु भगवान जी की नाभी से एक कमल निकला जिस पर पाँच मुखों वाले श्री ब्रह्मा जी विद्यमान थे। ब्रह्मा जी ने अपने आप को अकेले देख कर सोचा कि मैं कौन हूँ और कहाँ से आया हूँ तब वह उस कमल का ढन्ठल पकड़ कर नीचे चले गये पर जड़ तक नहीं पहुँच सके। तब ब्रह्मा जी वापस आ कर सोच में पड़े ही थे कि उनके कानों में वाणी पड़ी कि आप ब्रह्मा हैं और मैं जग का कर्त्ता–धर्त्ता हूँ। मैं ही आपका पिता हूँ। मैं यह सत्य कहता हूँ कि तुम मेरी नाभी से ही प्रकट हुए हो। श्री ब्रह्मा जी ने यह बात अस्वीकार करते हुए कहा कि तुम मेरे पिता नहीं, मैं ही तुम्हारा पिता हूँ। तब श्री विष्णु भगवान जी प्रकट हुए और दोनों के बीच में वचन विवाद चल पड़ा। श्री ब्रह्मा जी ने श्री

विष्णु भगवान जी की कोई बात न मानी और दोनों के बीच में युद्ध आरम्भ हो गया। यह युद्ध कई वर्षों तक होता रहा, जब युद्ध का कोई परिणाम नहीं निकला और किसी दूसरे समाधान को न देख कर भोले बाबा सदा शिव जी ने विवाद को हल करने के लिये सोचा। तब ब्रह्मा जी व श्री हरि विष्णु जी के बीच मे लिङ्ग. आकार रूप में प्रकट हुए। इस चमत्कार को देखकर व अपने मध्य में शिव लिङ्ग. को देखकर दोनों ने इस शिव लिङ्ग. को अपनी कलहा–निवृत्ति का साधन समझा और युद्ध बन्द किया। उस शिव लिङ्ग. का न आदि था न अन्त था और न ही मध्य था। तब श्री ब्रह्मा जी ने व श्री विष्णु भगवान जी ने इस चमत्कारी शिव लिङ्ग. की पूजा की इस चमत्कारी शिव लिङ्ग. का प्रकाश सहस्त्रों अग्नि ज्वालाओं से भी अधिक था। यही स्थूल शिव मूर्ति शिव लिङ्ग., लिङ्गे.श्वर कहलाते हैं। जिन के पार व थाह का पता श्री ब्रह्मा जी व श्री विष्णु भगवान जी भी न लगा सके। तब श्री ब्रह्मा जी व श्री हरि विष्णु जी ने यही फैसला किया कि जो आदि–अन्त का पता लगाए गा वही पिता कहलाएगा। तब श्री ब्रह्मा जी अन्त का पता करने के लिए हंस रूप धारण करके ऊपर की ओर व श्री हरि विष्णु जी वराह रूप धारण करके नीचे की और आदि का पता करने के लिये चल पड़े। अनन्त वर्षों की खोज के बाद भी आदि व अन्त का पता नहीं लगा सके। तब वापस आ कर श्री हरि विष्णु जी ने सत्य उच्चारण करते हुए कहा कि उन्हें आदि का पता नहीं चला है। पर श्री ब्रह्मा जी ने झूठ बोलते हुए कहा कि मुझे अन्त का पता चल गया है।

झूठ पर झूठ बोलने पढ़ें, जब झूठ हो छिपाना।
छिपाए न छुपे 'विष्णु', कर न पाए सत् का सामना।।

असत्य पर सत्य से ही विजय प्राप्त की जा सकती है। सत्य आचरण वाला ही सुन्दर व प्रिय होता है। इच्छाओं को बढ़ावा देने से इच्छाएँ बढ़ती ही जाती हैं और इन से दुख ही उत्पन्न होता हैं। इच्छाओं की प्यास सन्तोष से ही बुझाई जा सकती है। यदि उद्देश्य शुभ न हो तो असफलता भी हो सकती है। उद्देश्य शुभ ही होना चाहिए। उस कार्य का करना अच्छा नहीं जिस से चरित्र कंलकित हो।

श्री ब्रह्मा जी भगवान भोले नाथ जी की माया से मोहित हो कर रजोगुण में आकर श्री हरि विष्णु भगवान जी को अपना जन्म दाता, पिता न मानकर विवाद में पड़ गये और पिता की उपाधि प्राप्त करने के लिये झूठ बोल बैठे। झूठ बोल कर झूठ बोलने वाला मान प्रतिष्ठा को खो बैठता है। इस को न पुण्य न यश प्राप्त होता है। झूठ कभी सत्य का सामना नहीं कर सकता। झूठ कभी न कभी प्रकट हो ही जाता है। भगवान भोले बाबा श्री सदा शिव ही श्री अमर नाथ जी के नाम से प्रसिद्ध हैं और बिना आंखों के सर्व सृष्टि को देखने वाले हैं और बिना कानों के सुनने वाले हैं, जो समस्त प्राणियों की हृदय गुफा में निवास् करते हैं, जो सर्व व्यापी हैं। ब्रह्मा जी को झूठ बोलने का दण्ड देने के लिए प्रकट हुए और ब्रह्मा जी का पाँचवाँ मुख जो कि बहुत बढ़–बढ़ कर रहा था, झूठ बोल रहा था, को अपने वायें हाथ के नख के अग्रभाग से बल पूर्वक काट डाला। ब्रह्मा जी को झूठ बोलने की सजा दे कर चतुर्मुखी बना डाला।

***सत्पथ गामी विजय पाए, सत्य ही होवे महान।
सत्य से बढ़ कर धर्म नहीं, 'विष्णु' सब करें सम्मान।।***

सत्य धारण करना सर्वोत्तम नीति है, इस से बढ़ कर और कोई श्रेष्ठ नीति नहीं। सत्य–पुरूष सदा सत्य ही बोलता है चाहे उस की जान भी चली जाए। सत्यवादी स्वार्थ के लिये झूठ नहीं बोलता। सत्य धारण करने वाला मानव ही प्रतिष्ठित होता है और श्री हरि की दृष्टि में अत्यन्त सम्मानित होता है। सत्य से पापी भी घबराता है। सत्य आचरण कभी मैला नहीं होता। सत्यवादी की प्रशंसा व कद्र उस के सद्‌गुणों से ही होती है। झूठ बोलने वाले की हानि ही होती है। असत्य व झूठकी ओर लगा हुआ मन, मानव को अधोगति की ओर ही ले जाता है। जान–बूझ कर झूठ बोलने वाला मानव पाप व अपयश, निन्दा का ही भागी दार होता है। जो स्वार्थ सिद्धि के लिये झूठ बोलते हैं, वह समय आने पर कष्ट ही पाते हैं। झूठ बोलने से वाणी मैली होती है, अपवित्र होती है और बुद्धि नष्ट होती है।

श्री ब्रह्मा जी की झूठी व अहंकार भरी वाणी को श्रवण करके साक्षात् रूद्र रूप धारण करके सदा शिव वहाँ प्रकटे और क्रोध से गरज उठे और प्रलय कारी वन कर ब्रह्मा जी का पाँचवाँ सिर काट डाला और चतुर्मुखी बना कर श्री ब्रह्मा जी को आज्ञा दी कि तुम काशी पुरी में जा कर वास करो और धर्म की स्थापना करते हुए सृष्टि पर राज करो। पापियों को दण्ड दो। भगवान श्री विष्णु जी को आदेश दिया कि तुम श्री ब्रह्मा जी पर शासन करते हुए सृष्टि का पालन करो। भयभीत हुए और कांपते हुए श्री ब्रह्मा जी ने

व श्री हरि विष्णु भगवान जी ने प्रणाम् करके शत्रूद्री पाठ का जाप करते हुए भगवान भोले बाबा सदा शिव जी की स्तुति की और भोले बाबा सदा शिव जी को जगदीश कह कर पुकारा। तब शिव शंकर जी ने प्रसन्न हो कर श्री ब्रह्मा जी को कहा कि तुम्हारा बढ़ा सत्कार होगा, मर्यादा में रह कर मर्यादा का पालन करते हुए सत्य नियमों को धारण करके सृष्टि की रचना करो। केतकी फूल जिसने झूठ बोलने में श्री ब्रह्मा जी का साथ दिया था को श्राप दिया कि तुम मिथ्या भाषी हो, मुझे आप की पूजा स्वीकार नहीं। श्री ब्रह्मा जी को सदा शिव भोले बाबा जी ने तत्वों का ज्ञान दिया।

भू-जल में, जल-तेज में, तेज-वायु, वायु-नभ, नभ-गर्व,
गर्व बुद्धि में, बुद्धि जीव में जीवात्मा अव्यक्त परमात्मा में।
प्रलय काल, क्रम-अनुसार 'विष्णु' इक दूजे में हैं समाते,
इन के विलोम से आदि में सदा शिव सृष्टि हैं रच जाते।।

सृष्टि के आदि में रचना के समय परमात्मा में से जीवात्मा, जीव (जीवात्मा) में बुद्धि, बुद्धि में अहंकार, अहंकार में आकाश, आकाश में से वायु, वायु में से तेज, तेज में से जल व जल में से पृथ्वी उत्पन्न की और प्रल्य काल में, भू–जल में, जल–तेज में, तेज–वायु में, वायु–आकाश में, आकाश–अहंकार में, अहंकार – बुद्धि में, बुद्धि जीवात्मा में और जीवात्मा अव्यक्त परमात्मा सदा शिव में विलीन हो जाते हैं। इस क्रमानुसार सदा शिव भोले बाबा सृष्टि की रचना व प्रलय करते हैं।

सृष्टि की उत्पत्ति के समय जीव पूर्व जन्म की वासनाओं से युक्त अन्तः करण के साथ उत्पन्न होता है। पुराने इतिहासों से, वेद–पुराणों व अन्य ग्रथों से पता चलता है कि सृष्टि के आदि में मनुष्य भोग सुखों को छोड़ कर, परमात्मा के सुखों में ही लालायित रहता था। भजन–कीर्तन कर के आत्मा को जानते व परमात्मा को पाते थे। वह अपने प्राप्त किये हुए ज्ञान द्वारा ही सब कुछ समझ जाते थे और सब कुछ पाने में सफल होते थे। उन में सदा सेवा के भाव ही होते थे। यदि हम उस प्रभु की सृष्टि की ओर ध्यान लगा कर देखें तो हमें सर्वत्र सेवा ही सेवा दिखाई देगी। सूर्य, चाँद, सितारे, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी व पृथ्वी पर सब वनस्पतियाँ सब सेवा के भाव से सेवा ही करते दिखाई देते हैं। पर हम उस प्रभु सदा शिव जी को भूल गये हैं और यह जानने के प्रयास भी नहीं करते कि भोले बाबा सदा शिव श्री अमर नाथ जी ही विश्व की उत्प्रत्ति, स्थिति और लय आदि के मूल कारण हैं, तत्वज्ञ हैं। निर्विकार होते हुए भी अपनी योग माया से ही इस विराट विश्व का आकार धारण कर के सृष्टि की रचना करते हैं। इन सदाशिव भोले बाबा श्री अमर नाथ जी को चाहे किसी भी रूप में सिमरण करो, अवश्य ही करना चाहिए।

जागते ही सवेरा मान के, लो पल्ला मंजिल का थाम।
थक के बैठने से 'विष्णु', वन नहीं पाए कोई काम।।

जीवन की यात्रा कहीं भी पहुँची हो हमें विचलित नहीं होना चाहिए। जो चला गया उस का स्मरण नहीं करना चाहिए आने वाले समय का सदुपयोग ही करना चाहिए।

जो आलस्य वश होकर थक के बैठ जाते हैं, ऐसे आलसी मानवों का कोई काम नहीं बन पाता है। जीवन यात्रा का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति ही होना चाहिए। क्योंकि मानव जीवन बार–बार नहीं मिलता और भोले बाबा सदा शिव जी की ही अनमोल देन है। जो इस जीवन का सदुपयोग करते हैं उन का ही उद्धार होता है।

शुभ कर्म करते-करते जीवन यात्रा जो पूरी करे।
लक्ष्य को पाए 'विष्णु' संसार सागर से तरे।।

उस क़ाम का करना अच्छा नहीं जिस के करने से पछताना पढ़े और जिस का फल रोते–रोते भोगना पढ़े। किसी भी कार्य को अपनी पूर्ण योग्यता व सामर्थ्य से करना चाहिए। कार्य करने की इच्छा हो तो शक्ति अपने आप ही आ जाती है। अच्छे कार्यों का करना ही अच्छे कर्मों का करना है। कर्म वह दर्पण है जिस से अपना ही प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। प्रयत्न करने से ही कार्य सिद्ध होते हैं, केवल इच्छा करने से नहीं। कर्म करते समय मानव दुख को भूल जाता है। शुभ कार्य करते – करते जो जीवन यात्रा पूर्ण करते हैं वह लक्ष्य को अवश्य ही पा लेते हैं। उनका इस संसार में गौरव व नाम रोशन होता है।

भगवान भोले बाबा श्री अमर नाथ जी का नाम समस्त संसार के मङ्गलों का मूल है। भगवान सदा शिव जी ही सृष्टि के आदि देव हैं और इन की पूजा देव, दैत्य, दानव, ऋषि, मुनि आदि सभी करते हैं। यही देवों के महादेव हैं और करूणा के सागर हैं। सृष्टि में पंच भूतों से बनी हुई सभी वस्तुओं में मानव ही श्रेष्ठ है और मानव को चाहिए कि

वह शुभ कर्म करता हुआ इस जीवन यात्रा को पूर्ण करे और लक्ष्य को प्राप्त कर के मोक्ष को प्राप्त हो।

परम तत्व शिव-शक्ति के रूप कभी न हों भिन्न।
ज्यों सूर्य व प्रकाश 'विष्णु' रहें सदा अभिन्न।।

शिव–शक्ति परम तत्व के दो रूप हैं।शिव–शक्ति एक दूसरे से कभी भी भिन्न नहीं होते। वह एक दूसरे से उसी प्रकार अभिन्न हैं, जिस प्रकार सूर्य व उसका प्रकाश, अग्नि व उसका ताप, दूध व उसकी सफेदी एक दूसरे से अभिन्न हैं। सदा शिव जी की अराधना भवानी माँ शक्ति की अराधना है और माँ भवानी शक्ति की उपासना सदा शिव जी की ही उपासना है।

माँ भवानी सती का यज्ञ में जाना।

हिमालय के श्रेष्ठ शिखर कैलाश पर्वत पर रहते हुए महाशिव व माँ भवानी सती को वहुत समय बीत गया कि एक दिन ब्रह्मा पुत्र श्री नारद जी श्री हरि गुण–गान करते हुए वहाँ पहुँचे जहाँ सदा शिव व माँ भवानी सती जी विराजमान थे। श्री नारद जी ने उनकी तीन वार परिक्रमा करके प्रणाम करते हुए कहा कि श्री दक्ष प्रजापति ने अपने महायज्ञ में जो की वह 'बृहस्पति–सव नामक यज्ञ' कर रहा है में सभी को बुलाया है और आप को नहीं बुलाया है। केवल आपको निमंत्रण नहीं दिया है। राजा दक्ष प्रजापति की उस नगरी को आप दोनों से रहित देख कर, उस का परित्याग करके दुखी मन से मैं आपके पास आया हूँ। भोले बाबा सदा शिव जी यह सुनकर चुप रहे। माँ भवानी सती

से न रहा गया और भोले बाबा सदा शिव जी से कहने लगी कि मैं अपने पिता के घर जाकर यज्ञशाला की शोभा देखूँगी।

अपूजक के पास कभी नहीं पूज्यमान हैं जात।
द्वेषक की पूजा 'विष्णु' पूजा नहीं कहलात।।

भगवान सदा शिव जी के बार–बार समझाने पर भी जव भवानी माँ सती नहीं मानी तब भोले बाबा सदा शिव जी महाराज ने कहा कि "हे सती! यद्यपि इस में कोई सन्देह नहीं कि मित्र, स्वामी, पिता और गुरू के घर बिना बुलाए भी जाना चाहिए, पर यदि कोई विरोध करता हो तो उस के घर कभी नहीं जाना चाहिए। क्योंकि वह पूज्यमान की प्रतिष्ठा को भङ्ग.कर सकता है"।

एक बार श्री ब्रह्मा जी की सभा में हम से दक्ष प्रजापति अप्रसन्न हो गये थे, उसी कारण से वह अब भी हमारा अपमान व विरोध करते हैं। इसी प्रयोजन से हमें निंमत्रण नहीं दिया है। इस स्थिति में तुम्हारा पिता के घर विन बुलाए जाना शोभित नहीं करता। तुम्हरा पिता के घर जाने का क्या अभिप्राय है, उसे सही और स्पष्ट रूप से वर्णन कर डालो। भोले बाबा सदा शिव जी ने फिर कहते हुए कहा कि जिन दुरात्माओं को अनादर का भय नहीं रहता वह ही उस स्थान पर जाते हैं यहाँ अनादर की भी सम्भावना रहती है। सम्मान के योग्य व्यक्ति को सम्मान न करने वाले के घर कभी नहीं जाना चाहिए। क्योंकि उस सम्मान न करने वाले अपूजक के द्वारा की गई वह पूजा–पूजा

नहीं कहलाती है। मेरी निन्दा सुनने से यदि तुम्हें सुख नहीं मिलता है तो तब निन्दक के घर मत जाओ। तब भवानी माँ सती ने उत्तर देते हुए कहा कि मुझे आपकी निन्दा सुनने में अति दुख होता है और मैं आपकी निन्दा सुन भी नहीं सकती हूँ, फिर भी मैं वहाँ जाऊँगी, अपने यज्ञ का भाग माँगूंगी।

निन्दा कीचड़ समान हो, करे गन्दा आचरण।
कष्ट पाएँ तीनों 'विष्णु' जीते जी हो मरण।।

उस युग के अन्त में प्रलय के समान सम्पूर्ण विश्व को भयभीत करने वाली काल रूपिणि भगवती भवानी माँ सती ने फिर कहा कि "हे नाथ! मैं पिता की नगरी में जाकर अपने पिता से आप के यज्ञ के भाग को प्राप्त करूँगी, अन्यथा यज्ञ का नाश कर डालूंगी।" तव भोले बाबा सदा शिव जी ने कहा कि "हे सती! यदि तुम जाना चाहती हो तो जाओ"। तव माँ भवानी कुछ गणों को लेकर रथ पर सवार हो गई और नन्दी उस रथ को अति वेग से हाँकते हुए राजा दक्ष प्रजापति की नगरी में यज्ञशाला के पास पहुँची। भगवती भवानी माँ सती को देखकर यज्ञशाला में उपस्थित सभी निमंत्रित भयभीत हो उठे। केवल भवानी माँ सती की माता प्रसूति व सती की वहनें आदर करते हुए व मुसकराते हुए मिलीं।

भगवती भवानी माँ सती ने महाशिव से द्वेष करने वाले राजा दक्ष प्रजापति को देखा और सोचा कि जगत में अनेक प्रकार के दुख हैं, परन्तु जाति अपमान से बढ़ कर कोई वड़ा दुख नहीं। राजा दक्ष प्रजापति ने क्रोध दीप्त नेत्रों

वाली व खुले वालों वाली भगवती भवानी माँ काली सती को देखा और पूछा कि तुम कौन हो? मेरी पुत्री सती ही हो। भगवती भवानी माँ सती ने उत्तर देते हुए कहा कि मैं आपकी पुत्री सती ही हूँ। तव राजा दक्ष प्रजापति ने कहा कि तुम त्रिलोक सुन्दरी अयोग्य शंकर को पति के रूप में पाकर दुखी दिखाई देती हो। महाशिव जी के प्रति राजा दक्ष प्रजापति द्वारा कहे गये निन्दा से परिपूर्ण वचन सुन कर क्रोध से प्रज्जवलित भगवती भवानी माँ सती ने कहा कि भोले बाबा सदा शिव शंकर का जाति अपमान करने के लिये ही, "हे पिता! आपने यज्ञ में नहीं बुलाया है और न ही यज्ञ में उनका स्थान रखा है। मैं कहती हूँ कि यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो पाप बुद्धि का त्याग करके भक्ति पूर्वक भगवान सदा शिव जी की अराधना करो। यदि निन्दा करोगे तो परमात्मा सदा शिव भोले नाथ तुम्हें नष्ट कर देंगे"। परन्तु राजा दक्ष प्रजापति ने एक न मानी। तव भगवती भवानी माँ सती ने छाया सती की रचना करके यज्ञ का विध्वंस करने की आज्ञा दी और स्वंय वहाँ से अन्तरध्यान हो गई। छाया सती देखते ही देखते यज्ञाग्नि में प्रवेश कर गई। यज्ञ कुण्ड की अग्नि देखते ही देखते बुझ गई और यज्ञ मण्डल शमशान के रूप में परिवर्तित हो गया।

पूज्यमान व्यक्ति की निन्दा करना उस पर कीचड़ उछालने के समान है। निन्दक जो दूसरे की निन्दा करता है वह अपने व दूसरे के आचरण को गन्दा करता है। निन्दा करने से निन्दा करने बाला, निन्दा सुनने बाला व जिसकी निन्दा हो रही हो इन तीनों व्यक्तियों की जीते हुए भी

हत्या हो जाती है। हमें सदा निन्दा करने बालों से वचना चाहिए।

मुनि श्रेष्ठ नारद व नन्दी के द्वारा वतलाए जाने पर कि भवानी माँ सती ने राजा दक्ष प्रजापति की यज्ञशाला में हो रहे यज्ञ के यज्ञकुण्ड में प्रवेश करके अपनी देह का त्याग कर दिया है। ऐसी महान कष्टकारी बात सुनकर शोकाकुल होकर भगवान सदा शिव भोले नाथ जी कहने लगे कि मुझे शोक सागर में छोड़कर "हे सती! तुम कहाँ चली गई हो। पिता के घर जाने के लिए मैंने तुम्हें अनेक प्रकार से रोका था, पर तुम हठ करके चली ही गई थी"।

सम्मान ही गौरव हावे, सम्मान ही मूल्यवान्।
सम्मानित का तिरस्कार, 'विष्णु' होवे मृत्यु समान।

उस व्यक्ति का शरीर धन्य है, जिस का उपयोग दूसरों की भलाई के लिये किया जाता है। यहाँ अधर्म है, वहाँ विपत्तियाँ ही विपत्तियाँ हैं और कलि पीढ़ित करता है। जो किसी नियम के अधीन नहीं रह कर, मन का ही गुलाम बन कर मनमानी करता है वह अपकीर्ति को प्राप्त होता है। जो तिरस्कार करता हो उसके पास कभी नहीं जाना चाहिए विन बुलाए तो मृत्यु ही आती है। सम्मान कर्ता के पास ही सम्मानित व्यक्ति को जाना चाहिए। सम्मान जीवन से भी अधिक मूल्यवान है। जमीन घर–वार चले जाएँ तो फिर बनाए जा सकते हैं। परन्तु सम्मान चला जाए तो फिर वापस नहीं लायाजा सकता है। सम्मान ही जीवन है। श्रद्धा से की गई पूजा–अर्चना ही पूजा होती है और अनादर कर्ता

के द्वारा बिना श्रद्धा के किया गया काम पूजा–अर्चणा आदि असत्य ही होते हैं। इसलिये जो काम किया जाए सत्य निष्ठा से व श्रद्धा से ही करना चाहिए। प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिये अपमान मृत्यु का कारण भी बन सकती है।

इस घटना को देख कर राजा दक्ष प्रजापति का मुख मण्डल मलीन हो गया और गहरी सांसें लेने लगा। देवता व महाऋृषि भी घबराकर आपस में कहने लगे कि भगवान भोले नाथ सदाशिव जी इस घटना का समाचार सुन कर, क्रुद्ध हो कर न जाने क्या कर डालें। महाऋषि नारद जी व नन्दी के द्वारा बतलाए जाने पर शोका कुल में डूवे हुए भगवान भोले नाथ सदाशिव जी ने क्रुद्ध होकर विकराल रूप धारण करके कुपित हो उठे। उनके इस रूप को देखकर सभी प्राणी भयभति हो उठे, पृथ्वी डोलने लगी और उनके तीसरे नेत्र से अत्यन्त तेज–अग्नि उत्पन्न हुई और देखते ही देखते एक परम पुरूष उत्पन्न हुआ जोकि साक्षात् यमराज के समान प्रतीत हो रहा था। उस परम पुरूष ने भगवान भोले नाथ सदाशिव जी की तीन प्रदक्षिणा करके प्रणाम करके विनती की, है पिता जी! मैं क्या करूँ मुझे आज्ञा दीजिए। तव भगवान भोलेनाथ सदाशिव बोले कि तुम्हारा नाम बीरभद्र है और सभी गणों के आदिपति हो। मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम राजा दक्ष प्रजापति की नगरी में जाकर यज्ञ को नष्ट कर डालो और मेरी निन्दा करने बाले राजा दक्ष प्रजापति का मुख काट डालो और जो देवतागण उसकी सहायता करें उन को भी दण्ड दो। यह कहते हुए भगवान भोले सदाशिव जी ने लम्बी सांसें छोड़ी जिन से हजारों शिवगण उत्पन्न हो गये और

अस्त्र–शस्त्र धारण करके वीरभद्र के साथ प्रणाम करके चल पढ़े।

सिंह नाद करते हुए दक्ष की नगरी में जहाँ राजा दक्ष प्रजापति ने फिर से यज्ञ आरम्भ किया था पहुँच कर वीरभद्र ने क्रोध युक्त गणों को यज्ञ नाश करने की आज्ञा दी और स्वंय दक्ष प्रजापति को पकड़ कर कहा कि जिस मुख से तुम ने परम पिता देवादि देव भगवान सदाशिव का अपमान किया है उसे काट डालूँगा और प्रहार करके उसके मुख को काटडाला और जो महादेव सदाशिव जी की निन्दा सुनकर हर्षित हो रहे थे को भी दण्डित किया।

भगवान सदाशिव भोले नाथ जी श्री ब्रह्मा जी की प्रार्थना करने पर व प्रार्थना को स्वीकार करके राजा दक्ष प्रजापति के घर पहुँचे। वहां भगवान सदाशिव भोले नाथ जी को आया देखकर बीरभद्र ने प्रणाम किया। श्री ब्रह्मा जी ने देवादिदेव त्रिलोचन भगवान सदाशिव भोले नाथ जी से फिर प्रार्थना करते हुए कहा कि राजा दक्ष प्रजापित को फिर से जीवित करदें। तव बीरभद्र सदाशिव जी की आज्ञा के अनुसार एक सिर जो बकरे का था ले आया और भगवान भोले बाबा सदाशिव जी ने उस लाए हुए बकरे के सिर को राजा दक्ष प्रजापति के धड़ के साथ जोड़कर अपनी योग माया से फिर जिन्दा कर दिया। तव पापी राजा दक्ष प्रजापति कांपता हुआ, हाथ जोड़े हुए भोले बाबा भगवान सदाशिव जी की उपासना करने लगा। भगवान भोले नाथ सदाशिव जी भगवती भवानी माँ सती के अवशिष्ठ शरीर को लेकर ब्रह्माण्ड मण्डल में घूमने लगे। हा! हा!

कार मचने पर कल्याण के उद्धेश्य से भगवान विष्णु जी ने अपने सुर्दशन चक्र से भगवती भवानी माँ सती के मृतक शरीर के टुकड़े किये। यह ५१ टुकड़े जहाँ–जहाँ और जिस खण्ड में गिरे वहां–वहां शक्ति पीठों का निर्माण हुआ।

भोले बाबा श्री अमर नाथ जी की गुफा में भगवती भवानी माँ सती का कण्ठ गिरा है, वहाँ भगवती भवानी माँ सती का शक्ति पीठ है। भोले बाबा श्री अमर नाथ जी की पवित्र गुफा स्थित कश्मीर में वने हुए हिमलिङ्ग. के दर्शन करने के साथ–साथ माँ भवानी सती का शिक्त पीठ भी दिखाई देता है और साथ ही श्रीगणेश पीठ दिखाई देता है। इन तीनों हिम वने पीठों के दर्शन करके मन शान्त हो जाता है और मन में यह भाव उत्पन्न होते हैं कि इन के दर्शन ही करते रहें।

-:पुरुषों के आचरण:-

सदा कल्यानकारी निष्पाप मार्ग ही अपनाएँ।
समाप्त हो जिनसे 'विष्णु' मन की द्वेष भावनाएँ।।

हमें सदा श्रेष्ठ व सत्य शब्द ही उच्चारण करने चाहिए जो प्रशंसापूर्ण और कल्याण कारक हों। हमें कल्याण करने वाले निष्पापमार्गों पर चलकर शुभ कार्य ही करने चाहिए। जिनके द्वारा द्वेष भावनाएँ समाप्त हो। सत्य–सुखकारी, प्रिय हितकारी, परोपकारी और यशगान करने बाले शब्दों को ही वाणी से उच्चारण करने चाहिए। जिन से मन में शुद्ध–भाव व शक्ति उत्पन्न हो। यहाँ धर्म बुद्धि है, वहीं

शान्ति, समृद्धि और कान्ति का निवास होता है। महा पुरूष वही होते हैं जो अपनी उन्नति के साथ–साथ सभी जनों का कल्याण व उन्नति की कामना करते हैं। कल्याणकारी कार्य करने से मन में सुख व शान्ति अनुभव होती है और पापकर्म करने से अशान्ति व दुख ही अनुभव होता है। कल्याणकारी कर्म ही शुभ होते हैं। अकल्याण कारी कर्मों का फल अशुभ ही होता है। सब कुछ जानते हुए भी जो द्वेष मन में रखते हुए कोई कार्य करता है वही मंदमति मानव होता है। किये हुए कल्याणकारी कार्य मरने के वाद भी प्रशंसनीय होते हैं। हमें सदा कल्याण कारी कार्य सत्य मार्ग अपना कर करने चाहिए जिन से द्वेष भावनाएँ मिट जाएँ और किये हुए कार्यों की प्रंशसा हो। जो कल्याणकारी कार्य करते हैं वह दूसरों को कल्याणकारी कार्य करने की सीख देते हैं।

दुर्जन-दुर्बुद्धि रखें 'विष्णु' दुर्नीति अपनाएँ।
दुष्ट दुर्वक्ता ही आवरू मिट्टी में मिलाएँ।।

दुष्ट मानव जिसके मन में खोट हो अपनी दुष्ट बुद्धि के द्वारा बुरी नीति का उपयोग करके दूसरों की निन्दा ही करता है। ऐसा दुष्ट दुर्वचन बोलने बाला दूसरों की मान–मर्यादा भंग कर डालता है। निन्दा करने वाली ऐसी दुराआत्माओं के पास कभी नहीं जाना चाहिए। वह अपने आचरण को मैला करता है ऐसे आचरण हीन, दुर्बुद्धि मानव स्वंय निन्दा जनक कार्य करके व निन्दा जनक बचन बोल कर दूसरों पर दोषारोपण करते हैं। मन्द बुद्धि दुर्जन ही निन्दा जनक शब्दों को उच्चारण करते हुए सम्मानित

पुरूषों पर चोट करते हैं और बार–बार चोट करके उनके घावों को कुरेदते हैं। ऐसे मानव जो सदैव दूसरों की निन्दा ही करते हों से बचना चाहिए। निन्दा जनक शब्द दूसरों के प्रति कहना, मानो लड़ाई को आमंत्रित करना है। निन्दा जनक कार्य करने से व निन्दा जनक बोल बोलने से अपना ही महत्त्व कम होता है और द्वेष–अग्नि में जलता रहता है। ऐसे आचारहीन व दुष्ट मानवों से सदा बचना चाहिए।

-:स्त्रियों के आचरण:-

ममता, करूण, शील भरी होवे पवित्र दयावान।
कर्त्तव्यों की पालक 'विष्णु' नारी होवे महान।।

जिस नारी में ममता है, करूणा है, जो नारी चरित्रवान है, उत्तम आचरण वाली है, कोमल स्वभाव वाली है, दयावान है और पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली है,। जो नारी अपने अन्तर्गत आने वाले माँ, पुत्रि, बहन व स्त्री के कर्त्तव्यों का पालन करने वाली है, वही आदरणीय व आर्दशवान, पूजनीय है, महान है और अपने परिवार को प्रकाश की ओर ही ले जाती है। जिस घर में ऐसी नारी हो उस घर में सदैव लक्ष्मी का वास होता है। इसके विपरीत जो नारी अपनी रूचि के अनुसार ही कार्य करती है, ऐसी नारी मान–मर्यादा को खोकर अपने परिवार को अन्धकार की ओर ही ले जाती है। नारी सदा आदर्शवान व सत्य आचरण वाली ही हो। सच्चे आचरण वाली पत्नी अपने पति के सुख के लिये सव कुछ त्याग सकती है।

लज्जा नारी का भूषण है, घर की लक्ष्मी कहलाए।
चरित्रवान नारी "विष्णु" पति की शोभा बढ़ाए।।

स्त्रियों की शील की रक्षा का दायित्व पुरूषों पर होता है। स्त्री पुरूष की गुलाम नहीं, सहधर्मिणी, अर्द्धांगिनी है। स्त्री पुरूष से उतनी ही श्रेष्ठ है, जितना अन्धकार से प्रकाश श्रेष्ठ है। स्त्री पुरूष के लिये सब से बढ़ा बरदान है। लज्जा ही नारी का अनमोल भूषण है। यहाँ नारियों का सम्मान व पूजा होती है, वहाँ लक्ष्मी निवास करती है। नारी ही घर की लक्ष्मी है। नारी बड़े–बड़े दुखों को होंठों पर मुस्कान रख कर सहन कर लेती है। सत्य आचारण वाली चरित्रवान पत्नी ही अपने पति की शोभा बढ़ाती है और अपने पति को ही सभी आभूषणों में सर्वश्रेष्ठ आभूषण मानती है। लज्जा, शील नारियों का सव से सुन्दर आभूषण है। नारी के लज्जा को खो देना बड़े शर्म की बात है। लज्जा ही नारी के चरित्र का दर्पण है। नारी को सर्वदा अपना पूरे शरीर को ढके रखना चाहिए। स्नान, नित्य कर्म, भोजन आदि पुरूषों की दृष्टि से बचा कर ही करना चाहिए।

पतिव्रत नारी धन्य है, न हो दूजा समान।
पतिव्रता पूज्यनिय हो 'विष्णु' करे कुल कल्याण।।

संसार में पतिव्रता नारी के समान कोई और धन्य नहीं। पतिव्रता नारी ही पूज्यनीय है। पतिव्रता सभी लोकों को पवित्र करने बाली है और सर्व विघ्नों को दूर करने वाली है। अपने कुल का कल्याण करने बाली है। ऐसी पतिव्रता नारी इस लोक में सम्पूर्ण भोगों का उपभोग करके अन्त में अपने पति के साथ कल्याण व परमगति को प्राप्त होती है। अग्नि की ज्वाला सारे विश्व को भस्म कर सकती है परन्तु पतिव्रता नारी अग्नि को भी भस्म कर सकती है। शीतल

कर सकती है। पतिव्रता नारी चन्दन सी शीतल होकर सब को शीतल कर सकती है और बिजली सी वन कर सब को ध्वंस्त कर सकती है।

सेवा कुल में आनन्द समझे रहे सदा तृप्त।
संतोषी नारी न घबराए 'विष्णु' जब हो विपत्त।।

जिस कुल में पति–पत्नी प्रसन्न रहते हैं, उस कुल में सौभाग्य और एश्वर्य निवास करता है। जिस स्त्री की प्रसन्नता से घर के सभी सदस्य प्रसन्न हों और घर के सदस्यों की प्रसन्नता से नारी प्रसन्न रहे, उसी घर में देवता निवास करते हैं और उसी घर में आनन्द की परिस्थितियाँ बनी रहती हैं। जिस घर की नारी मर्यादा में रहते हुए कुल की सेवा में आनन्द समझने वाली है और विपत्तियाँ आने पर नहीं घबराने वाली है, ऐसी नारी ही महान नारी व सन्तोषी नारी है और सहन शक्ति की साक्षात् प्रतिमूर्ति है। ऐसी नारी ही धैर्य का अवतार है। जो स्त्री अपने सद्‌गुणों के आधार पर श्रेष्ठ कर्म करती है, उसे कुल में यश ही यश मिलता है। जो नारी अपने घर की शोभा बढ़ाती है उसका घर तपोभूमि के समान है।

पतिव्रता जो करे सदा हित साधन पति परिवार।
पतिकुल, पितृकुल का 'विष्णु' वही करे उद्धार।।

घर में उत्तम संस्कारों वाली पतिव्रता नारी अपने घर को सुख मय, मङ्गलमय व स्वर्गमय बना देती है और गृहस्थ जीवन सुख मय व्यतीत होता है। ऐसी पतिव्रता नारी अपनी

सन्तान को संस्कारी व यशमयी ही वनाती है। जो पतिव्रता नारी अपने पति का हित सोचती है और अपने परिवार जनों का हित सोचती है व दूसरों से भलाई ही करती है, ऐसी पतिव्रता नारी पतिकुल व पितृकुल की शोभा बढ़ाती है। उद्धार करती है। नारी के लिये पतिव्रता धर्म से बढ़कर और कोई धर्म नहीं। पतिव्रता नारी की सफलता का रहस्य उस का दृढ़ संकल्प, मेहनत साहस व विश्वास है।

सब को शीतल करे पतिव्रता वनके चन्दन सी शीतला।
ध्वंस्य भी कर सके 'विष्णु' वन कर बिजली सी ज्वाला।।

सत्य की चिंगारी असत्य के पहाड़ को भी भस्म करने में समर्थता रखती है। अग्नि जी ज्वाला सारे विश्व को भस्म कर सकती है, परन्तु पतिव्रता नारी तो अग्नि को भी भस्म कर सकती है और चन्दन सी शीतल होकर सब को शीतल कर सकती है। वह समयानुसार बिजली भी बन सकती है और चन्दन सी शीतल भी वन सकती है।

चारों ओर मुख खोलके बातें करने वाली प्यार की धनी।
स्वतन्त्रता से चलने वाली नन्हीं कोमल कली।।
बेटी से बहु-पत्नी बनी, फिर बनगई माँ गृहिणी।
दो गज चादर के आँचल की लाज 'विष्णु' बनी जननी।।

बेटी की रक्षा का दयित्व बाप पर होता है, शादी के वाद पति पर व वृद्धावस्था में पुत्र पर होता है। बेटी जन्म लेने के बाद अपने माता–पिता के घर में बड़े लाड़–प्यार से पाली–पोसी जाती है और स्वतन्त्र रूप से वह कोमल कली

हंसती–खेलती बातें करती, नाचती–गाती है। वह मासूम कली स्वतन्त्र रूप से हंसती–खेलती हुई बड़ी होती है। शिक्षा प्राप्त करती है। बड़े होने पर माँ–बाप उस का विवाह नेक, उत्तम पुरूष से ही करना चाहते हैं और ऐसा ही करते हैं। ऐसा ही करने से चिन्ता मुक्त हो सकते हैं। बड़े लाड़–प्यार से पली हुई बेटी, विवाह होने पर बहु बनती है, बहु से पत्नी बनती है और फिर नारी, माँ और गृहिणी बन जाती है। तव दो गज चादर का आंचल ही उसकी लाज बन जाती है। स्त्री का सौंदर्य उस के पतिव्रत धर्म में ही है। वह अपने घर में सन्तोष रूपी अमृत से ही तृप्त रहती है। ऐसी महान् नारी को ही लोक व परलोक में सिद्धि मिलती है। जो नारी अपने कर्त्तव्य कर्मों के पालन में तत्पर रहती है, वहीं सफल महान नारी है और देवता भी उस की सहायता करते हैं।

भगवती भवानी माँ-पार्वती के अवतार की कथा

छाया सती के आत्मदाह करने के पश्चात व माँ भवानी सती के अदृश्य हो जाने के वाद, शिव शंकर भोले बाबा जी ने काम रूपी सिद्ध पीठ पर परमेश्वरी जगदम्बे माँ का ध्यान करते हुए घोर तप किया। बहुत समय बीतने पर जगदम्बे माँ भवानी ने प्रसन्न होकर त्रैलोक्य मोहनी रूप में प्रत्यक्ष दर्शन दिये और कहा कि मैं शीघ्र ही हिमालय की दो पुत्रियाँ वन कर अवतार लूंगी। क्योंकि आपने सती के मृत्तक शरीर को सर पर उठा कर नृत्य किया था? इसलिये एक मैं जल मयी गङ्गा का रूप धारण करके आप को ही पति रूप में प्राप्त करके आप के सिर पर विराज़मान रहूँगी।

दूसरे रूप में पार्वती होकर आप के साथ रहूँगी।

फिर राजा हिमाचल और रानी मैना की तपस्या से प्रसन्न होकर माँ सती ने गङ्गा व पार्वती वन कर अवतार लिये। फिर जल रूप धारण करके गङ्गा बन कर शिव–शकंर जी के सर पर स्थान प्राप्त किया और माँ भवानी पार्वती के रूप में अवतार लेकर सदा शिवजी की अर्धाङ्गिनी बनी।

भगवती भवानी माँ पार्वती, सदा शिव अर्धाङ्गिनी शक्ति स्वरूपा है। गणेश व कार्तिकेय जननी हैं। सभी देवता आदि इनकी पूजा करते हैं। भगवती भवानी माँ पार्वती ही रूद्राणी हैं। भगवती भवानी माँ पार्वती की प्रिय सखियां जया और विजया हैं। कार्तिकेय समस्त देव सेना के सेनापति हैं। श्री गणेश जी सम्पूर्ण जगत् में सभी में प्रथम पूज्यनीय हैं। सदाशिव भोले बाबा जी ने सवारी के लिये नन्दी, रहने के लिये सूनी दिशाएँ, खेलने के लिये श्मशान, आभूषणों के लिये सर्प रखे हैं। बदन पर श्मशान भस्म, केश जटा–जूट वनाए हुए, कण्ठ में विष पान किये हुए, अङ्गों में सांप लपेटे हुए व मृगचर्म धारण किये हुए और सर पर जटा–जूट में गङ्गा व चन्द्र धारण किये हुए हैं। ऐसा होते हुए भी भगवती भवानी माँ पार्वती विषम परिवार को सम्भालती हैं।

अमर कथा का वर्णन।

एक समय भगवान भोले बाबा सदा शिव शंकर कैलाश पर्वत के शिखर पर भगवती भवानी माँ पार्वती के सहित बिहार कर रहे थे कि भगवती भवानी माँ पार्वती जी ने भगवान भोले बाबा सदा शिव जी को प्रसन्न मुद्रा में देख

कर कहा कि हे नाथ! आप ने मुझे प्रणव सहित सभी मन्त्रों का उपदेश दिया है, परन्तु आपने अपने "अमर तत्व" का वखान नहीं किया। मैं आप से "अमर तत्व" स्वरूप को जानना चाहती हूँ। हे नाथ! यदि आप की मुझ पर कृपा है तो इस "अमर तत्व" का अवश्य वर्णन कीजिए। भगवती भवानी माँ पार्वती ने फिर कहा कि जो कल्प वृक्ष कि छाया तले रहते हैं वह दरिद्री नहीं रहते, आप ज्ञान के कल्प वृक्ष हैं और आपकी ही छाया तले मैं रहती हूँ। मैं ज्ञान की दरिद्रा हूँ और दरिद्रता मुझे सता रही है। मेरी प्रार्थना है कि अपने "अमर तत्व" का वखान करके इसे दूर कर दीजिए। मैं हाथ जोड़े हुए विनती करती हूँ कि मैं पिछले जन्म से ही कष्ट में हूँ और इस भ्रम से आज तक भी कष्ट सहन कर रही हूँ। मेरे इस कष्ट का निर्वाण कीजिए। भगवती भवानी माँ पार्वती जी की इस प्रकार प्रार्थना करने पर और कष्ट भरी वातों को सुन कर भोले बाबा श्री अमर नाथ जी की कृपा का सागर व मन में आन्ददायिनी प्यार भरी सुखद लहरें उमड़ने लगीं और उनके उमड़ते ही कृपा का सागर भी उमड़ पड़ा। भगवती भवानी माँ पार्वती जी को "अमर कथा" सुनाने की इच्छा उत्पन्न हो उठी। तब भोले बाबा श्री अमर नाथ जी के मन में यह बात आई कि इस कैलाश पर्वत पर तो ऋषि–मुनियों, देवगणों, सर्पों व दूसरे जीव–जंतुओं का मेला लगा रहता है और इस कथा को कहने व सुनने वाला तो अमृत्व को प्राप्त होता है, शिवधाम को प्राप्त होता है। कथा सुनाने के लिये निर्जन व एकान्त स्थान गुफा आदि की जरूरत है और वही ठीक रहेगी। तब भोले बाबा श्री अमर नाथ जी ने कश्मीर घाटी के सिँधु बन में यहां

भोले बाबा सदाशिव श्री अमर नाथ जी की गुफा है, को ही कथा सुनाने के लिये सुरक्षित स्थान ठीक समझा।

कश्यप ऋषि द्वारा निर्मित कश्मीर घाटी में यह पवित्र गुफा कश्मीर घाटी की सिंधु बन की कालन रेंज में पँचतरनी से ६ किलो मिटर की दूरी पर पर्वतों के बीच में स्थित है। कैलाश व काशी के अतिरिक्त यह पवित्र गुफा भी भगवान भोले बाबा श्री अमर नाथ जी (शिव–शक्ति) का वास स्थान है। श्रीनगर से उत्तर पूर्व में प्राय १४१ कि. मी. की दूरी पर स्थित है और जम्मू से प्रत्य ४४० कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यह पवित्र गुफा प्राय १३५०० फीट की उँचाई पर स्थित है। यह पवित्र गुफा लगभग ५० फीट लम्बी है। और १०० फीट चोड़ी हैं। कन्दरा की छत से बूंद–बूंद निर्मल जल टपकता रहता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो अमृत जल की बूंदे टपक रही हों। पवित्र गुफा का वातावरण अति शान्त है। इस पवित्र गुफा में भगवान भोले बाबा श्री अमरनाथ जी का स्वंयम्भू हिमलिङ्ग. हर साल माह आषाढ, श्रावण में वनता है और इसके साथ ही श्री गणेश जी का व भगवती भवानी माँ पार्वती के भी हिम पीठ प्राकृतिक रूप से बनते हैं। भगवान भोले बाबा श्री अमरनाथ जी इस पवित्र गुफा में भवानी माँ पार्वती के व श्री गणेश जी के साथ साकार रूप में प्रकट होकर भक्तों को दर्शन देते हैं। यह हिमलिङ्ग. फिर धीरे–धीरे पिगलकर निराकार रूप में परिवर्तित होकर विराजमान रहते हैं। इसी पवित्र गुफा में अमरेश्वर नाम का ज्योतिर्लिङ्ग. व शक्ति पीठ वनते हैं। इन अमरेश्वर नामी ज्योतिर्लिङ्ग. व शक्ति पीठ के अतिरिक्त श्री गणेश जी का भी हिम पीठ प्राकृतिक रूपसे बनता है।।

यह तीनों हिम पीठ प्राकृतिक नियमानुसार आषाढ़—श्रावण माह में बनते हैं। इसी पवित्र गुफा में भगवती भवानी माँ सती का कण्ठ गिरा था। इस पवित्र गुफा का निर्माण प्राकृतिक रूपसे भोले बाबा श्री अमर नाथ जी के द्वारा ही किया गया है और इस पवित्र गुफा के बनाने में मनुष्य का कोई हाथ नहीं है और इस में हिमलिङ्ग. भी प्राकृतिक रूप से स्वंय ही बनते हैं और पक्की बर्फ के बने हुए होते है जव कि पवित्र गुफा के बाहर कच्ची बर्फ ही पड़ी होती है। इस पवित्र गुफा में बड़ी अनोखी शक्ति है श्रद्धालुओं की मनोकामना पूंर्ण होती है। इस प्राकृतिक पवित्र गुफा में बने हुए तीनों हिम पीठ अनोखे ऐसे प्रतीत होते हैं मानो कि यह किसी शिल्पी द्वारा शीशे के बनाए गये हों। इन को देखते ही रहने का मन करता है। दूर—दूर से यात्री दुर्गम रास्तों की यात्रा तय करके इन के दर्शन करने के लिये आते हैं। यह तीर्थ स्थान भारत के प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों में से एक अति पवित्र तीर्थ स्थान है। विश्व भर में केवल इसी स्थान पर अनोखे, चमत्कारी, प्राकृतिक भोले बाबा श्री अमरनाथ जी भवानी भगवती माँ पार्वती व श्री गणेश जी के हिम पीठ बनते हैं। यही भोले बाबा श्री अमरनाथ जी का व भवानी माँ पार्वती का पवित्र गुफा में अमरेश्वर धाम व शक्ति पीठ है। सृष्टि के आदि काल से ही सारे मानव समाज का आस्था का स्थान है।

जब मानव में जात—पात का कोई भेद—भाव न था, तभी से इस धाम का विचित्र महत्त्व चला आ रहा है। यह धाम जात—पात से रहित सर्म्पूण जातीय वर्ग से सम्बन्ध रखता है और भाई चारा बनाए रखने की प्ररेणा देता है। यहाँ

सभी धर्मों के लोग दर्शन करने के लिये आते हैं।

पर्वत राज राजा हिमवान हिमालय के समय में महाऋषि नारद जी के द्वारा भवानी माँ पार्वती को बार-बार कहने पर कि वह भगवान सदा शिव भोले बाबा श्री अमरनाथ जी से पूछे कि उनके गले में पहनी हुई रूण्डमाला का क्या रहस्य है ? तब ही माँ भवानी पार्वती जी की प्रार्थना को स्वीकार करके भोले बाबा सदा शिव श्री अमरनाथ जी ने प्रसन्नचित होकर बतलाया कि इस रूण्डमाल में तुम्हारे पृथक-पृथक जन्मों के मुण्ड हैं। तब भगवती भवानी पार्वती को अहसास हुआ कि वह भी जन्म-मृत्यु के बन्धन में बंधी हुई है। इसके पूर्व कि भोले बाबा श्री अमरनाथ जी कथा सुनाते, ने अमर कथा के महत्व को ध्यान में रखते हुए पहले अपनी जटा केशों को चन्दन से मुक्त किया जिस स्थान पर मुक्त किया उसका नाम चन्दन बाढ़ी पड़ा। इस स्थान की उँचाई समुद्र सतह से ७८०० फीट है।

पवित्र गुफा तक पहुँचने के यात्रा मार्ग।
व रास्ते में पढ़ने वाले पवित्र स्थान।।
पहला मार्ग
चन्दनबाढ़ी।।

जिस स्थान पर भोले बाबा श्री अमरनाथ जी ने अपनी जटा-केशों को चन्दन से मुक्त किया उस स्थान का नाम चन्दनबाढ़ी हुआ। इस स्थान की ऊँचाई सतहा समुद्र से ७८०० फीट है। पहलगांव से चन्दनबाढ़ी का मार्ग १६ किलो मीटर का है और गाड़ियों द्वारा तय किया जा सकता है। इस स्थान का पहले नाम बैलगांव था। इस जगह पर भोले

बाबा श्री अमरनाथ जीने अपने एक नन्दी (बैल) को छोड़ दिया था और समय बीतते–बीतते इस का नाम पहलगांव हो गया। लिदर नदी इस मार्ग में किनारे–किनारे बहती हुई इन स्थानों की शोभा बढ़ाती है।

पहलगांव से प्रायः ६.५ कि. मी. सफर तय करने पर नील गङ्गा नामी प्रसिद्ध स्थान है, कहा जाता है कि एक बार क्रीड़ा करते हुए भोले बाबा श्री अमरनाथ जी के मुख का स्पर्श भगवती भवानी माँ पार्वती जी के नेत्रों के साथ हो गया और अजंन लग जाने से काला हो गया। अपने मुख पर कालिमाँ लगी देखकर मुख को गङ्गा जी में धोया जिस से श्री गङ्गा जी का रंग काला पड़गया और श्री गङ्गा जी का नाम नील गङ्गा पड़गया। नील गङ्गा जी में स्नान करने से मन के दोषों व विकारों का नाश हो जाता है। मन शुद्ध हो जाता है। चन्दनबाढ़ी से आगे की यात्रा पालकियों में, टट्टूओं के द्वारा भी की जा सकती है।

पिस्सूटापः-

चन्दबाढ़ी व शेषनाग के बीच में एक स्थान पिस्सू–टाप आता है। इस स्थान पर भोले बाबा श्री अमरनाथ जी ने देवताओं की प्रार्थना करने पर यहाँ रहने बाले व यात्रियों को कष्ट देनेबाले दानवों को बुरी तरह पीस डाला था और उनकी अस्थियों का एक बहुत बड़ा डेर लगजाने से एक पर्वत सा बन गया जो कि पीसू टाप के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जो यात्री भोले बाबा श्री अमर नाथ जी के मत्रों का व इनके नामों का जाप करता हुआ इस पहाड़ पर से

गुजरता है उसके पाप–ताप व मन के विकार सभी नष्ट हो जाते हैं।

शेषनाग पर्वत :-

प्राचीन काल में इस पर्वत पर एक वायु रूपी दैत्य रहता था और आने–जाने वाले मानवों को यात्रियों को व दूसरे जन्तुओं को कष्ट पहुँचाया करता था को भगवान श्री बिष्णु जी की आज्ञा से शेषनाग जी ने अपने मुखों द्वारा भक्षण करके समाप्त कर डाला था। तब से इस पर्वत का नाम शेषनाग पड़ा है। इसी जगह में शेषनाग झील भी है। यहाँ भोले बाबा सदाशिव श्री अमरनाथ जी ने नागों की पहनी हुई सभी मालाओं को उतार कर नागों को मुक्त किया था। इस झील में शेष नाग जी के साक्षात दर्शन होते हैं। इस स्थान की ऊचाँई सतह समुद्र से ११७३० फीट है। इस स्थान का अद्‌भुत व आश्चर्य जनक आकर्षण इस शेषनाग झील व सर्पनुमा सात शिखरों बाले शेषनाग पर्वत से है। इस झील के बफीले पानी में स्नान करने से शरीर में जोश व फुर्ती उत्पन्न होती है, थकावट दूर हो जाती है। हृदय शुद्ध होता है। इस झील में स्नान करने का फल श्री गङ्ग.ा जी में स्नान करने के बराबर ही मिलता है।

(महागुन्नस) गणेश पर्वत

शेषनाग पर्वत से गणेश पर्वत का एकदम ऊँचा मार्ग है और प्रायः १४५,०० फीट की ऊँचाई पर स्थित है। इस स्थान पर भगवान भोले बाबा श्री अमरनाथ जीने अपने पुत्र श्री गणेश जी को छोड़ दिया था। तब से यह स्थल गणेश

पर्वत से प्रसिद्ध हुआ। इसी स्थान को कश्मीरी भाषा में महामानुस भी कहते हैं। यह स्थान शेषनाग से प्रायः ४.५ किलो मीटर की दूरी पर है।

पँचतरणी

गणेश पर्वत (महगुन्नस) के बाद पोश पत्थर तक कुछ डलवाँ बाला मार्ग है। इस मार्ग में जगंली जड़ी–बूटियाँ, जगंली फूल खिले दिखाई देते हैं और आगे चल कर मैदान आता है। यह स्थान पँचतरणी नाम से प्रसिद्ध है। यह स्थान समुद्र तल से प्रायः १२७२० फीट की ऊँचाई पर स्थित है और शेषनाग से १३ किलो मीटर की दूरी पर है। इस स्थान पर भोले बाबा श्री अमर नाथ जी ने व भगवती भवानी माँ पार्वती जी ने तांडव नृत्य किया था और तांडव नृत्य करते–करते भोले बाबा श्री अमरनाथ जी की जटाओं से गङ्गा की पाँच धाराएँ निकली थी और इन पाँच धाराओं के निकलने से इस स्थान का नाम पंचतरणी पड़ गया। इसी स्थान पर भोले बाबा श्री अमरनाथ जी ने पाँच तत्वों का परित्याग किया था।

डमारक देवता

पँचतरणी के वाद रत्न नामक पहाड़ के ऊँचे शिखर पर डमारक देवता के दर्शन करने चाहिए। एक बार भगवान भोले बाबा श्री अमरनाथ जी अपने पुत्र कार्तिक के साथ क्रीड़ा कर रहे थे और उन्होंने अपने एक गण जिसका नाम महाडमारक था को आदेश दिया था कि सन्ध्या काल होने पर उन्हें सूचित करदे ताकि वह नियमानुसार सन्ध्या कर

सकें। परन्तु महाडमारकगण को निद्रा आगई और वह सूचित नहीं कर सका, जिस से सन्ध्या में विघ्न पड़ने पर भोले बाबा श्री अमरनाथ जी ने उस गण को शिला रूप होने का श्राप दिया। उस गण के क्षमायाचना करने पर भोले बाबा जी ने वरदान दिया कि जो मेरे दर्शनों के लिये आएगा और पहले यदि तुम्हारी पूजा अर्चना व परिक्रमा करेगा उसकी ही यात्रा सफल होगी।

गर्भयोनि

शिखर से उतरते समय मार्ग में गर्भयोनि तीर्थ है। उस गर्मयोनि तीर्थ में से प्रवेश करते हुए आगे बड़ें। कहा जाता है कि जो इस गर्भयोनि से गुजरता है उसका पुर्नजन्म नहीं होता।

भोले बाबा श्री अमरनाथ जी की पवित्र गुफा

पँचतरणी से भोले बाबा श्री अमरनाथ जी की पवित्र गुफा तक का रास्ता ६ किलो मीटर का है। यात्री पँचतरनी में पवित्र पाँच नदियों के अमृत मय जल से स्नान करके भोले बाबा श्री अमरनाथ जी की पवित्र गुफा की और प्रस्थान करते हैं। इसी पगडंडी मार्ग पर अमरावती गङ्गा का पँचतरनी का पवित्र संगम है। संगमटाप के पास चन्दनबाढ़ी से आने वाला व बालटाल से आने वाला मार्गों का संगम है। यात्री संगम टाप से होते हुए डमारक देवता को पूजते हुए व गर्भयोनि से गुजरते हुए भोले बाबा श्री अमर नाथ जी के जयकारे लगाते हुए हर, हर, महादेव कहते हुए पवित्र गुफा में पहुँचते हैं और पवित्र

प्राकृतिक निर्मित इस गुफा में प्राकृतिक रूपसे बने हुए भोले बाबा श्री अमरनाथ जी के अमरेश्वर हिमलिङ्ग. व गणेश पीठ और भगवती भवानी माँ पार्वती के हिम पीठ के दर्शन करते हैं। यात्री पवित्र गुफा में सत्य निष्ठा से पूजा–अर्चना करते हैं। और उसी पवित्र गुफा में अमर कबूतरों के दर्शन भी करते हैं।

चन्दनबाढ़ी तक सफर गाड़ियों में तय करने के बाद पद यात्रा स्थान चन्दनबाढ़ी से आरम्भ होती है। यह यात्रा पालकियों व टट्टूओं की सवारी से भी की जा सकती है। चन्दनबाढ़ी से पवित्र गुफा तक के आने–जाने का मार्ग पाँच दिनों का है। यह यात्रा अति प्राचीन है और असली यात्रा है। क्योंकि इस मार्ग पर सभी देखने योग्य पवित्र तीर्थ स्थान पड़ते हैं जिन के दर्शनों से मन शुद्ध होता है, शान्ति प्राप्त होती है। इस ३० किलो मीटर की यात्रा में यात्री शेषनाग, व पँचतरनी में रात्रि विश्राम करते हैं और इन स्थानों पर सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

दूसरा मार्ग

भोले बाबा श्री अमरनाथ जी की इस पवित्र गुफा तक पहुँचने का दूसरा मार्ग श्रीनगर व सोनामर्ग मार्ग से है। यह मार्ग ८५ किलो मीटर का है। श्रीनगर लेह राष्ट्रीय मार्ग पर जोजीला दर्रा की घाटी में सोनामर्ग से १५ किलो मीटर की दूरी पर बालटाल स्थान पर इस मार्ग की यात्रा का (वेसकैप) आधार शिवर है। इस स्थान वालटाल से पवित्र गुफा का रास्ता केवल १४ किलो मीटर का है। यह रास्ता एक दिन में पैदल, टट्टूओं व पालकियों से तय किया जा

सकता है। यह रास्ता हैलीकॉप्टर के द्वारा भी तय किया जा सकता है।

वालटाल से केवल २ किलो मीटर की दूरी पर दोमेल है। दोमेल स्थान से पवित्र गुफा की चढ़ाई बहुत कठिन है और सावधानी से तय करने बाली है। दोमेल से वरेरी मार्ग का रास्ता ५ किलो मीटर का है। वरेरी मार्ग से संगम टाप तक का रास्ता ४ किलो मीटर का है। और संगम टाप से पवित्र गुफा का रास्ता ३ किलो मीटर का है। यदि कोई यात्री पालकी या टट्टू व पिट्ठू करना चाहे तो वह भी सरकार द्वारा निर्धारित मूल्यों से उपलब्ध हो सकता है।

तीसरा मार्ग(हैलीकॉप्टर)

तीसरा मार्ग हवाई सेवाओं का है। जम्मू व श्रीनगर से हवाई सेवाएँ भी उपलब्ध हैं। हैलीकॉप्टर से बालटाल पवित्र गुफा तक का रास्ता केवल १० मिनट में तय किया जा सकता है। जिन के पास कम समय होता है और यह सफर तय करने की समर्थता रखते हैं यह सफर हैलीकॉप्टर से तय कर सकते हैं।



भजन

शिवाँ दे द्वारे आ।
शिवाँ दे जय कारे ला।
छोड़िए मोह माया ते झूठ।
छोड़िए मोह माया ते झूठ।

सिंधु बने बिच शिवाँ।
गुफा सुंदर बनाईए।।
जिथें कथा माँ गौराँ गी सुनाईए।
जिथें कथा माँ गौराँ गी सुनाईए।।

कथा गौराँ सुनदे सुनदे।
रेई ही सुती दी।।
जेड़ी माँ ने थोड़ी गै सुनी ही।
जेड़ी माँ ने थोड़ी गै सुनी ही।।

सारी कथा छपिए।
शुक ने सुनी ए।।
कालेश्वर दौड़े लेई त्रिशूल।
कालेश्वर दौड़ लेई त्रिशूल।।

टिडे बिच बट्टिका दे।
शुक रेया छपे दा।।
माफ किता नाथाँ होई मजबूर।
माफ किता नाथाँ होई मजबूर।।

वारें वरें बार आईए।
नसी गया जगलें।।
छोड़िए सारा जग़ घरवार।
छोड़िए सारा जग़ घरवार।।

ऐ कथा परीक्षत गी।
शुक ने सुनाईए।।
करी दित्ता बेढ़ा ओदा पार।
करी दित्ता बेढ़ा ओदा पार।

शिवाँ दे द्वारे आ।
शिवाँ दे जय कारे ला।
छोड़िए मोह माया ते झूठ।
छोड़िए मोह माया ते झूठ।

सिंधु वन में प्राकृतिक निर्मित इस पवित्र सुन्दर गुफा के पास पहुँच कर भगवान भोले बाबा श्री अमरनाथ जीने एक गण काल–आग्नि नामक प्रकट किया जिसने प्रकट होते ही भोले बाबा श्री अमरनाथ व भगवती भवानी माँ पार्वती की तीन प्रदक्षिणा ले कर विनती की कि उस के लिये क्या आदेश है। आज्ञा दीजिए! तव भोले बाबा श्री अमर नाथ जी ने काल–अग्नि को आज्ञा दी वह इस गुफा के आस–पास के सारे क्षेत्र जो कि वन बूटियों से भरा पड़ा है को जला कर साफ कर दे ताकि इस क्षेत्र में कोई जीव जन्तु आदि न रहें और हमारी इस अमर कथा को कोई दूसरा न सुन सके। मैं अमर कथा शक्ति पार्वती को एकान्त में सुना सकुँ और शक्ति पार्वती के अतिरिक्त इस कथा को कोई दूसरा न सुन सके।

आज्ञा पाकर गण काल–अग्नि ने पवित्र गुफा के आस–पास वाले क्षेत्र को अग्नि प्रज्जवलित करके भस्म करके साफ कर डाला। भगवान भोले बाबा श्री अमर नाथ जी ने पवित्र गुफा के अन्दर अपनी मृगचर्म बिछाई और गद्दी पर आसन लगाकर ध्यान में स्थित होकर भगवती भवानी माँ पार्वती जी को अमर कथा सुनाने लगे। कुछ समय तक भगवती भवानी माँ पार्वती जी कथा सुनती रही और कथा सुनते–सुनते हाँ–हाँ करती रही। फिर योगनिद्रा की माया से नींद की गोद में समा गई। भोले बाबा श्री अमर नाथ जी की मृगचर्मा की गद्दी के नीचे संयोग वश एक छेद में एक तोते का अंडा पड़ा हुआ रह गया था, जो कि विकसित शुक तोते के रूप में वहाँ से निकल कर भगवती भवानी माँ पार्वती जी के स्थान पर हाँ–हाँ करता हुआ हुँकारे भरता रहा और कथा के समाप्त होने पर जब भोले बाबा श्री अमरनाथ जी ने भगवती भवानी माँ पार्वती जी से पूछा कि आप ने सारी कथा श्रवण कर ली है। तव भगवती भवानी माँ पार्वती जी ने उत्तर देते हुए कहा कि मैंने यह अमर कथा केवल अमृत मंथन व श्री हरि बिष्णु चरित्र तक ही सुनी है। भगवती भवानी माँ पार्वती जी के इतना कहते ही भोले बाबा श्री अमरनाथ जी के आश्चर्य की सीमा न रही और देखने पर सामने गुफा के अन्दर एक शुक वैठा दिखाई दिया। भगवान भोले बाबा श्री अमरनाथ जी की दृष्टि पड़ते ही शुक उड़ गया और बाबा भोले नाथ अमरेश्वर जी त्रिशूल लेकर उस शुक को मारने के लिये पीछे दौड़े। वह शुक घबराया हुआ तीनों लोको में उड़ता–उड़ता फिरता रहा, पर उसे छुपने की कोई जगह न मिली। तब वह

उड़ता–उड़ता सरस्वती नदी के किनारे महा ऋृषि व्यास जी के आश्रम में पहुँचा और जम्हाई लेती हुई महा ऋृषि व्यास जी की पत्नी बट्टिका के मुख में छोटा रूप धारण करके प्रवेश कर गया।

श्री भोले बाबा ने महा ऋृषि व्यास जी के आश्रम में पहुँच कर कहा कि मेरा चोर आपके आश्रम में आया है, मेरे हबाले करो। मैं उसका सँहार करना चाहता हूँ, क्योंकि उसने छुपकर अमर कथा को सुन लिया है। तव महा ऋृषि व्यास जी ने अपनी पत्नी बट्टिका से पूछा! पूछने पर व्यास पत्नी ने उत्तर दिया कि ऐसे लगता है कि कोई जीव जम्हाई लेते हुए उसके पेट में चला गया है। महा ऋृषि व्यास जी ने तब कहा कि आप जो कुछ करना चाहते हो कर लो। परन्तु बट्टिका स्त्री है और उसने कोई अपराध नहीं किया है और स्त्री को मारना महापाप है। दूसरी बात यह कि शुक अमर कथा सुन चुका है और अमर कथा सुनके अमर हो गया है उसको मारना सम्भव नहीं। तव भोले बाबा श्री अमर नाथ जी निरूपाय उसे छोड़कर वहाँ से वापस लौट आए।

शुक अमर कथा सुनने के प्रभाव से ब्रह्म ज्ञानी हो गया और व्यास पत्नी बट्टिका के गर्भ में बारह वर्षों तक निवास करता रहा जब श्री व्यास जीने इस (बालक) शिशु को अपनी दिव्य दृष्टि से देखा और पूछा कि तुम बाहर क्यों नहीं आते हो। तब बालक ने उत्तर दिया कि मुझे सासाँरिक माया घेर लेगी। यदि श्री हरि आकार मुझे आश्वासन दें कि मुझ पर माया का प्रभाव नहीं पड़ेगा, तब ही मैं बाहर

आऊँगा। फिर वैसा ही हुआ शुक शिशु के रूप में बाहिर निकल आया और गर्भ से बाहिर आते ही घर आदि सारा जगछोड़कर सन्यास लेकर बन में तपस्या करने चला गया। यही बाद में शुक देव जी कहलाए और कलिकाल के आरम्भ में यही अमर कथा राजा परीक्षत को सुनाई और उसका बेड़ा पार कर दिया था। जो वैकुण्ठ को प्राप्त हुए।

सद्‌गुण ग्रहणं करें सदा सत्तपात्र बुद्धिमान।
श्री हरि कथा का दान 'विष्णु' होवे उत्तम दान।।

यदि अच्छी बात छुपकर भी ग्रहण कर ली जाए, सुन ली जाए तो वह चोरी नहीं। भक्त सत्तपात्र हो तो श्री शुक देव जी जैसा, केवट, शवरी व मीराँ जैसा जो श्री हरि के स्वरूप को जान पाए। भगवती भवानी माँ पार्वती योग निद्रा की माया से सो गई और बुद्धिमान शुक लाभ उठा गया। मूड़ जन जो केवल संसार सुख में ही डूबे रहते हैं, उन को सुख ऐसे प्रतीत होता है जिस प्रकार गन्दगी में रहने वाले कीड़ों को गन्दगी में। शुक देव जी की यही सोच थीकि प्राणी इस महा भंयकर संसार में नक्षत्रों की भांति ही चक्कर काटता रहता है। यही कथा श्री शुक देव जी ने राजा परीक्षत को सुनाकर उस का बेड़ा पार कर दिया था। जो दूसरों की सेवा करता है, चाहे किसी भी तरीके से की जाए। जो कोई अन्न दान करता है, जो कोई श्री हरि की कथा का दान करता है, से बड़ा ओर कोई उत्तम दान नहीं। जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म भी उसकी रक्षा करता है।

दूसरों के उपकार के लिये जो स्वार्थ त्याग कर देते हैं वही धन्य हैं।

इस अनित्य शरीर से करलो काम प्रवीण।
अन्त में हो जाए 'विष्णु' पाँच तत्वों में लीन।।

जब तक मानव की बुद्धि व मन में अज्ञान का वास रहे गा, तव तक मानव संसार चक्रमें भटकता ही रहे गा। हमारी आयु निरन्तर ही कम होती जा रही है। मानव जीवन अति अनमोल है और सभी योनियों में श्रेष्ठ है। यह श्री हरि की अनमोल देन है। इस लिये हमें निरन्तर श्री हरि सिमरण करते रहना चाहिए और इस शरीर का सद–उपयोग करते हुए सदा दूसरों की भलाई के लिये नेक काम करते रहना चाहिए। हमें काल का भरोसा न करके और अज्ञान से उपजने बाले विषय–विकारों में न फंसकर नित्य श्रेष्ठ कार्य करते रहना चाहिए। क्योंकि अन्त में पाँच तत्वों से बनी यह काया इन ही पाँच तत्वों आकाश, वायु, अग्नि, जल; पृथ्वी में लीन हो जाती है। मनुष्य शरीर बार–बार नहीं मिलता और सद्मार्ग ही जीवन में कल्याण का मार्ग है।

भगवान भोले बाबा श्री अमरनाथ जी की पवित्र गुफा तक पहुँचने के लिये पहले वाहिर से आने वाले यात्रियों को जम्मू आना पड़ता है और यह सफर रेल गाड़ियों हवाई जहाझों से व गाड़ियों से तय किया जा सकता है। जम्मू पहुँच कर जम्मू से ऊधमपुर, कुद, पत्नीटाप, वटोत, रामबन, वनिहाल, जवाहर टनल, काजीकुंड खन्नाबल अवन्तीपुरा, पामपुर आदि नामक स्थानों से होते हुए श्रीनगर पहुँचते हैं।

यह रास्ता जम्मू से श्रीनगर तक ३०० किलो मीटर का है। श्रीनगर से आगे श्री अमर नाथ जी की पवित्र गुफा तक पहुँचने के दो मार्ग हैं।

एक मार्ग श्रीनगर से पहलगाँव् से चन्दनबाड़ी तक का गाड़ियों द्वारा तय किया जा सकता है और पवित्र गुफा तक का मार्ग पैदल तय किया जाता है। यह रास्ता खन्नाबल से अनंतनाग–मटन नुनवाँ कैप वाली सड़क से तय किया जा सकता है। लिदर नदी भी इसी मार्ग के साथ बहती है।

दूसरा रास्ता श्रीनगर से बालटाल तक का ८५ किलो मीटर का है। यह रास्ता श्रीनगर लेह राजमार्ग पर सोनामर्ग से होता हुआ बालटाल तक का है जो कि गाड़ियों द्वारा तय किया जा सकता है। और आगे का पैदल तय किया जाता है। हैलीकॉप्टरों द्वारा भी वालटाल तक व वालटाल से पवित्र गुफा तक सफर तय किया जा सकता है। वालटाल से पवित्र गुफा तक का रास्ता पालकियों द्वारा टट्टूओं द्वारा निर्धारित किराया दे कर किया जा सकता है। रास्ते में भंडारे वालों की ओर से निशुल्क खाने पीने रहने आदि का प्रबन्ध होता है। जो कि सेवा भाव से यात्रियों की सहुलियत के लिये किया गया होता है। जो धर्म की रक्षा करता है जो दूसरों की सेवा करता है धर्म भी उसकी रक्षा करता है। जिस ने अपने धर्म का परित्याग कर दिया है, जो धर्म का त्याग करता है, धर्म भी उसका त्याग कर देता है।

बालटाल से व चन्दनबाड़ी से आगे पवित्र गुफा तक के

दोनों मार्ग पहाड़ी हैं। इन रास्तों में पड़ने बाले पवित्र जल से स्नान करने से सारी थकावट दूर हो जाती है। शान्त व पवित्र वातावरण से ह्रदय पाप कर्मों को छोड़कर सत्य कर्मों की ओर आकर्षित होता है और पवित्र होता है। यात्री हर–हर महादेव के जयकारे लगाते हुए, कीर्तन करते हुए व महा मन्त्र, ॐ नमः शिवाय का जाप करते हुए बड़े हर्ष व उल्लास से व शुद्धमन रखकर पहाड़ी मार्ग पर चलते हुए झरनों पर वने हुए लकड़ी के पुलों को पार करते हुए व बर्फ पर चलते हुए पवित्र गुफा तक की यात्रा बड़े आनन्द से तय करते हैं।

कबूतरों का भेद (रहस्य)

श्री भोले बाबा शिव शंकर श्री अमरनाथ जी को कबूतरों के रहस्य के विषय में भगवती भवानी माँ पार्वती जी के द्वारा पूछने पर कि कौन से गण कबूतर हुए और क्यों कबूतर हुए? भोले बाबा श्री अमरनाथ जी ने बतलाया कि एक समय नन्दी व उस की पत्नी सुयशा जिन को मैंने अजय होने का वरदान दिया था और कहा था कि तुम दोनों भी वहाँ रहोगे जहाँ मैं रहूँगा। इस प्रकार मेरे द्वारा दिये हुए वरदान के अनुसार वह शिवतत्व को प्राप्त करके मेरे साथ ही रहने लगे और मेरी सेवा करने लगे। एक समय जब मैं सन्ध्या के समय नृत्य कर रहा था कि नन्दी व सुयशा आपस में कुरू–कुरू शब्दों का उच्चारण करते हुए वातों में मग्न हो गये, जिसके कारण मेरे नृत्य में बिघ्न पड़ा और विघ्न पड़ने से क्रोधित होकर मैंने उन को श्राप दिया की तुम दोनों दीर्घ काल तक कबूतर वनकर कुरू–करू

करते रहो। मेरे द्वारा दिए हुए इस श्राप के कारण दोनों कबूतर व कबूतरी हुए। जो कि अभी भी इस भोले बाबा श्री अमरनाथ जी की पवित्र गुफा में उनके साथ निवास करते हुए यात्रियों को दर्शन देते हैं। उनके दर्शनों से पाप–ताप दूर होते हैं और इन विशेष कबूतरों को देख कर जो श्रदालु 'जय' शब्द का उच्चारण करते हैं उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। इन कबूतरों के दर्शन अवश्य करने चाहिए।

भगवान भोले बाबा शिव शंकर श्री अमरनाथ जी की प्रतिमाएँ व नृत्य प्रतिमाएँ समस्त भारत के विभिन्न स्थानों, खजुराहो, भुवनेश्वर, ऐलिफेन्टा, सोमनाथ, काशी, हरि द्वार, कश्मीर, नेनीताल, शिमला, जम्मू, पूंछ, मानसरोवर आदि में पूरे वैभव के साथ स्थित हैं। भोले बाबा श्री अमरनाथ जी का ताण्ड़व नृत्य मात्र नृत्य ही नहीं, इस नृत्य में सम्पूर्ण शैव दर्शन होते है। ताण्डव नृत्य में भोले बाबा श्री अमरनाथ जी की विखरी हुई जटाएँ ब्रह्माण्ड प्रतीक होती हैं। जटाओं में गङ्ग.ा ज्ञान का प्रतीक है, और चन्द्र ज्योति का प्रतीक है। तीसरा नेत्र साक्षात् अग्नि का प्रतीक है। फुंकार भरते सर्प वासनाएँ हैं, मुण्डमाला निकास है। ताण्डव शमशान का नृत्य है। ताण्डव नृत्य के पाँच रूप हैं। रचना, स्थिति, संहार, माया, व क्षमा जो कि ब्रह्मा, विष्णु, और रूद के कार्य हैं। जिन को सदाशिव ताण्डव नृत्य में क्रियानित करते है। उनका नृत्य पञ्चाक्षरी है। नमः शिवायः न,म,: शि,वा,यः का समुदाय है। इनके पग में न, नाभि में मः, इनके कन्धे में शि,मुख,में वा और मस्तक में यः है। नमः शिवायः यही पाँच–अक्षरी भोले बाबा शिव शंकर श्री अमर नाथ जी का महामन्त्र है। यह महामन्त्र सर्व कष्टों को दूर

करने बाला है।

पवित्र अमर गङ्ग.ा

आदि काल में भोले बाबा श्री अमरनाथ जी ने सृष्टि की रचना की तब देवता भी मृत्यु के वश में थे। देवता एकत्रित होकर भोले बाबा श्री अमरनाथ जी के पास गये और उनकी स्तुति करके प्रार्थना की उनकी मृत्यु से रक्षा कीजाए। तब भोले बाबा श्री अमरनाथ जी ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार करके अपनी जटाओं को खोल कर चन्द्रकला को नचोड़ा और नचोड़ने से अमृत धारा वह निकली। यही मृत धारा पवित्र अमृत गङ्ग.ा है और इस का पान करने से ही देवता अमृत (शाश्वत) को प्राप्त हुए। पवित्र अमर गङ्ग.ा भोले बाबा श्री अमरनाथ जी की पवित्र गुफा के दामन में गुजरती है। पवित्र अमृत रूपी जल जो कि पवित्र गुफा के ऊपर से एक धारा के रूप में आता है और कुछ अमृत जल पवित्र गुफा के अन्दर से निकलता है भी इसी अमर गङ्ग.ा में जा मिलता है। पवित्र अमर गङ्ग.ाजल जो कि पवित्र गुफा के अन्दर से निकलता है को यात्री प्रसाद के रूप में बोतलों में भर कर घर साथ ले जाते हैं। और अपने साथी सम्बधियों को प्रसाद के रूप में बांटते हैं। इस पवित्र गुफा की छत से भी बूंद–बूंद अमृत जल टपकता रहता है और ऐसा प्रतीत होता है कि भोले बाबा श्री अमरनाथ जी अमृत बूंदो की बर्षा कर रहे हैं। पहले यह यात्रा एक माह की हुआ करती थी। अब यह यात्रा यात्रियों की संख्या को देखकर दो माह की करदी गई है। यह अमर गङ्ग.ा आगे चलकर पचँतरनी की ओर चली जाती है।

पवित्र भस्म

जव भगवती भवानी माँ पार्वती जी ने भगवान भोले बाबा श्री अमर नाथ जी को अमर कथा सुनाने की विनती की और भोले बाबा श्री अमरनाथ जी ने अमर कथा सुनाने की सहमति व्यक्ति की तव अमर कथा सुनाने से पहले एक रूद्र गण काल–अग्नि को प्रकट किया और उसे आज्ञा दी कि इस पवित्र गुफा के आसपास के जड़ी–बूटियों बाले जंग़ल को जलाकर साफ करदे, ताकि कोई ओर प्राणी अमर कथा न सुन सके। इस आज्ञा के अनुसार गण काल अग्नि ने पवित्र गुफा के आस–पास का स्थान जो की जगंली जड़ी–बूटियों से भरपूर था को जला कर राख कर दिया, फिर भोले बाबा जी ने अमर कथा माँ पार्वती को सुनाई। आदि काल में देवताओं द्वारा प्रार्थना करने पर कि उनकी मृत्यु से रक्षा की जाए, तब भोले बाबा श्री अमरनाथ जी ने अपनी जटाओं में से एक चन्द्रकला को नचोड़ा और नचोड़ने से जो अमृत जल बूंदे पृथ्वी पर गिरी वह अमर गङ्ग.ा बन गई और जो बूंदे भोले बाबा श्री अमरनाथ जी के शरीर पर पड़ी और उन के सूख जाने से राख वन कर पृथ्वी पर उसी पवित्र गुफा के पास पड़ी। यह राख पवित्र गुफा के आस–पास जलाए हुए जड़ी–बूटियों वाले जगंल की राख से मिल कर पवित्र भस्म हुई। इसी पवित्र भस्म को यात्री श्री भोले बाबा श्री अमरनाथ जी के वने हुए पवित्र गुफा में हिमलिङ्ग. व श्री गणेश पीठ व भवानी माँ पार्वती के वने हुए हिम पीठों के दर्शन करते हुए मस्तक पर व अपने शरीर पर लगाते हैं। यह पवित्र भस्म यात्री प्रसाद के रूप में अपने घर भी लेजाते हैं। और अपने साथी–

सम्बधियों में बाँटते हैं।

होम विभूति अनमोल औषधि करे रोग हरण।
गौरव बढ़ाए यह 'विष्णु' कराए मृत्यु स्मरण।।

भस्म का एक विशेष महत्व है। इसको भोले बाबा श्री अमरनाथ जी अपने शरीर पर लगाते हैं। और भगवान भोले बाबा के उपासक व साधु भी इसे अपने शरीर पर लगाते है। भस्म का अर्थ है नष्ट करना, यह सव पापों को तापों को चर्म रोगों का हरण करती है। यह भस्म श्री हरि महाकाल का स्मरण कराती है, याद दिलाती है। 'भ' का अर्थ है नष्ट करना और 'स्म' का अर्थ है स्मरण कराना। 'भस्म' को ही विभूति भी कहते हैं और जिस का अर्थ है गौरव। यह भस्म जो धारण करता है, यही भस्म उसके गौरव को बढ़ाती है और अमङ्ग.लों से रक्षा करती है। भस्म हमें यह भी याद दिलाती है कि यह शरीर भी नश्वर है, जिस प्रकार सब कुछ भस्म हो जाता है उसी प्रकार यह पाँच भूतों का शरीर इक दिन मृत्यु को प्राप्त होकर पाँच भूतों में ही मिलकर भस्म हो जाएगा। भस्म यह भी याद दिलाती है कि मृत्यु किसी भी समय आ सकती है। हमें श्री हरि भोले बाबा श्री अमर नाथ जी का स्मरण करते ही रहना चाहिए। (समय) काल किसी भी क्षण बिन बुलाए आ सकता है।



यात्रा श्री अमरनाथ जी का समय व छड़ी मुबारक की कथा

भारत वर्ष के कोने–कोने में पवित्र तीर्थ स्थल हैं और प्रत्येक यात्री को चाहिए कि बह यात्रा आरम्भ करने से पहले जिस यात्रा पर वह जा रहा है के बिषय में पूरी जानकारी उपलब्ध करलें। पवित्र स्थल कहाँ स्थित है उस पवित्र स्थान तक पहुँचने के क्या–क्या साधन हैं और उस स्थल का क्या महत्त्व है ? यह पवित्र भारत वर्ष की भूमि, श्री राम, श्री कृष्ण, श्री भोले बाबा शिव–शंकर जी की व ऋृषियों की प्रकट भूमि है तथा तपस्थली है। इन सुन्दर तीथों की एक लड़ी में मुक्ति दायिनी धाम भोले बाबा श्री अमरनाथ जी की पवित्र गुफा व पवित्र गुफा के भीतर प्राकृतिक रूप से वनने बाले भोले बाबा श्री अमरनाथ जी के हिमलिङ्ग. व श्री गणेश जी और भवानी माँ पार्वती के हिम पीठों के दर्शन व पवित्र गुफा में आदि काल से रहने वाले अमर कबूतरों के दर्शन करना है। पवित्र अमृत समान अमर गङ्ग.ाजल का पान करना और पवित्र भस्म को लेप करना है। श्रद्धालु तो पवित्र अमर गङ्ग.ा का अमृत जल व पवित्र गुफा की पवित्र भस्म वहां से लेकर अपने घरों में प्रसाद के रूप में ले जाते हैं और अपने साथी सम्बधियों में बांटते हैं। इस भारत वर्ष की पवित्र भूमि में जन्म लेकर समय का सद–उपयोग करते हुए बिनां समय नष्ट किये हुए भोले बाबा श्री अमरनाथ जी की भक्ति करनी चाहिए। क्योंकि मानव तन बड़े भाग्य से मिलता है और वह भी महान भारत वर्ष में। मानव तन सभी जीवों में अनमोल है। जो एक बार इस तीर्थ स्थल के दर्शन कर लेता है, उस का मन

बार–बार दर्शन करने को करता है। यात्रा मार्ग में ऊँचे बर्फ से लदे हुए पहाड़, हरे–भरे बन, निर्मल जल धाराएँ और मन को मोह लेने वाले सुन्दर दृश्य नजर आते हैं। शान्त व निर्मल वातावरण, शुद्ध ऊर्जा का संचार करने बाली हवा कई प्रकार की मानव लाभ–दायक जड़ी–बूटियाँ दिखाई देती हैं जोकि यात्रियों के हृदय में मधुरता, शुद्धता व अति वेग से चलने की उमंग उत्पन्न करती हैं।

दीर्घ काल से चली आ रही यह तीर्थ यात्रा पहले बड़ी कठिन यात्रा हुआ करती थी। और कुछ प्रतापी, महाज्ञानी व ऋृषि–मुनि ही इस यात्रा को किया करते थे। सब से पहले इस तीर्थ स्थल का पता महात्मा शुक देव जी को लगा, जिन्होंने अमरकथा इसी पवित्र गुफा में सुनी थी। इसके बाद इस पवित्र गुफा का पता श्री व्यास जी व उनकी पत्नी बट्टिका को लगा। महा ऋृषि भृगु जी ने भी यह यात्रा की है। महाऋृषि कश्यप जी जिनके नाम पर कश्मीर का नाम पड़ा हुआ है, यह कश्मीर घाटी प्राचीन काल में सती सर नाम की झील जिसका नाम भगवती भवानी माँ सती के नाम से पड़ा है में डूबी हुई थी। श्री कश्यप ऋृषि जी ने पहाड़ों को काटकर इस झील का पानी बहा कर और जमीन निकलने पर उसे बसाया तभी से महा ऋृषि कश्यप जी के नाम पर कश्मीर घाटी का नाम कश्मीर पड़ा है। महा ऋृषि कश्यप जी भी भोले बाबा श्री अमरनाथ जी की इस पवित्र गुफ़ा के दर्शन किया करते थे। कश्मीर की शासक रानी 'दिदा' जी व लोरन की महारानी चन्द्रिका जी जोकि भोले बाबा श्री अमर नाथ जी की बड़ी उपासक थी भी इस पवित्र गुफा के दर्शनों के लिये आया करती थीं।

आदि शंकराचार्य जो की ईसा के पूर्व सातवीं शताब्दी में दक्षिण के केरल प्रान्त में पूर्ण नदी के तट पर कलादि नामक गाँव में श्री शिव गुरू नामक व्यक्ति के घर में पैदा हुए। उनकी माता का नाम सुभद्रा देवी था ने महान भारत वर्ष में कई मठों व मन्दिरों का निर्माण किया आदि शंकराचार्य जी ने भी भोले बाबा श्री अमरनाथ जी की पवित्र गुफा के दर्शन किये हैं। श्री आदि शकराचार्य जी ने सनातन धर्म की रक्षा व प्रतिष्ठा के लिये महान भूमि भारत वर्ष के चारों कोनों में चार मठ स्थापित किये। श्रीनगर स्थित श्री शंकरचार्य मन्दिर (मठ) श्री शंकर पर्वत पर उनकी स्मृति में बनाया गया है यहाँ सभी धर्मों के श्रद्धालु दर्शन करने को आते हैं। प्रायः एक हजार फीट की ऊँचाई पर इस मठ से श्रीनगर शहर का दृश्य देखने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो पूरा श्रीनगर शहर ही मन्दिर के चरणों में वसा है। किसी समय में कश्मीर हिन्दू धर्म व सस्कृति का प्रमुख केंद्र रहा है और कश्मीर की भूमि देव भूमि, ऋृषियों की भूमि, रही है। श्री शंकराचार्य जी की दृष्टि के अनुसार विश्व में केवल एक ही सत्य वस्तु है और वही सदाशिव जी ही हैं। हिन्दु धर्म के लोग सभी धर्मों को सत्य तथा श्री हरि तक पहुँचने का एक सत्य पथ मानते हैं। मुगलों के शासन काल में यात्रा कम होती गई और वहुत कम हो गई। कश्मीर से संस्कृति लुप्त होती चली गई और भोले बाबा श्री अमरनाथ की यात्रा नाम मात्र की ही रहगई।

स्वामी विवेका नंद जी महाराज जिन का जन्म कलकत्ता में १२ जनवरी १८६३ को हुआ था। विवेका नंद जी महाराज भी सन १८६८ में श्री अमरनाथ जी की पवित्र गुफा की

यात्रा की है और इस पवित्र गुफा में वने हुए प्राकृतिक हिम पीठों के व अमर कबूतरों के दर्शन किये हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी, स्वामी राम तीर्थ जी व भगिनि निवेदिता जी, भी इस पवित्र गुफा के दर्शन करने को आचुके हैं। अव विश्व भर से व महान् भारत वर्ष के हिन्दू यहाँ गुरू पूर्णिमा से श्रावण पूर्णिमा के बीच बड़ी श्रद्धा भक्ति–भाव से पवित्र गुफा व इस पवित्र गुफा के अन्दर बनने वाले प्राकृतिक हिम पीठों के दर्शन करते हैं और अमर कबूतरों के दर्शन करते हैं। सत्य निष्ठा व श्रद्धा से आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या निरन्तर बढ़ती ही जा रही है।

एक अन्य मान्यता यह भी है कि ५०० साल पहले एक गोचर जिसका नाम बूटा मलिक था जो कि बड़ा नेक व दयालु व्यक्ति था को एक साधु ने कोयले से भरा हुआ एक थैला दिया। घर पहुँच कर जब उसने थैला खोला और देखा कि उस थैले में कोयले के स्थान पर सोना पड़ा हुआ था। वह यह चमत्कार देखकर आश्चर्यचकित हो गया और प्रसन्नता से नाचने लगा और साधु बाबा का धन्यवाद करने के लिये साधु बाबा को ढूँढने चल पड़ा परन्तु काफी सफर तय करने पर भी कृपालु बाबा जी दिखाई नहीं दिये। अपितु एक गुफा दिखाई दी जिस में हिम के प्राकृतिक हिमलिङ्ग. वने हुए थे जिस की चर्चा उसने गाँव में की ओर वह उस पवित्र गुफा में भोले बाबा श्री अमरनाथ जी के दर्शन करने के लिये आया करता था। अभी भी उसके वंश के लोग व दूसरे गोचर व चरवाहे भी दर्शन करने के लिये आया करते हैं।

अब यह यात्रा गुरू पूर्णिमा से श्रावण पूर्णिमा के महीनों में दो महीनों की होती है। श्रावण पूर्णिमा के दिन छड़ी मुबारक इस पवित्र गुफा में पहुँचती है और पूजा अर्चना व प्राकृतिक वने हुए हिम पीठों के दर्शन करते हैं। श्रावण मास में की गई यात्रा बड़े भारी पुण्यों को देने बाली है। क्योंकि भगवान भोले बाबा शिव शंकर श्री अमरनाथ जी ने अपना स्वरूप श्रावण पूर्णिमा में प्रकट किया था।

पहले इस यात्रा का प्रबन्ध जन्मू कश्मीर सरकार किया करती थी। वाद में सन २००० से इस यात्रा का प्रबन्ध श्री नीतीश सैन कमेटी की रिपोर्ट्र पर श्री अमरनाथ श्राईनबोंड की देख–रेख में होने लगा।

प्राचीन इतिहास के अनुसार प्राचीन काल में मध्य प्रदेश के जिला होशंगाबाद से महन्त चाँदी की छड़ी ले कर यात्रा आरम्भ करते थे। यह यात्रा बहुत दूरी में होने के कारण व लम्बी होने के कारण यात्रा में कठिनाइयाँ आती रही। तव इन कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए सिखों के पचंम गुरू श्री अर्जुन देव जी ने महन्त जोकि छड़ी लेकर यात्रा आरम्भ करते थे, अमृतसर में थोड़ी जगह दान देकर यहाँ से ही छड़ी मुबारक आरम्भ करने को कहा। फिर छड़ी मुवारक का संचालन अमृतसर से होता रहा। वर्षों तक अमृतसर में यात्रियों का एक समूह एकत्रित होकर यात्रा का प्रारम्भ महन्त जी की देख–रेख में धनवानों द्वारा लंगरों व रहने–सहने का आयोजन श्रद्धालुओं की मदद से किया जाता था।

पिछली शताब्दी में यात्रा जम्मू से आरम्भ होने लगी।

सर्व प्रथम जम्मू के महराजा जी की देख रेख में छड़ी मुबारक पूजन श्रीनगर में हुआ करता था और श्रीनगर से छड़ी मुबारक यात्रा आरम्भ होती थी। वाद में यह यात्रा जम्मू से रक्षाबन्धन से ८/१० दिन पहले महन्त दिपेन्द्र गिरि महराज जी के नेतृत्व में जम्मू से आरम्भ हुआ करती थी जोकि दशनामी अखाड़ा श्रीनगर में विश्राम के बाद आगे प्रस्थान करती थी। अव फिर यह छड़ी–मुबारक यात्रा सप्ताह पूर्व श्रावण पूर्णिमा से श्रीनगर के दशनामी अखाड़ा से प्रारम्भ होकर प्रस्थान करती है। पहले श्रीनगर स्थित श्री शंकराचार्य जी के मन्दिर में महन्त दिपेन्द्रगिरि महाराज जी के नेतृत्व में पूजा–अर्चना की जाती है पूजा–अर्चना के बाद यह छड़ी मुवारक पद यात्रा जिसमें हजारों साधु श्रदाल, शिव भक्त, भोले बाबा श्री अमरनाथ जी बर्फानी के जयकारे लगाते हुए अगली पड़ावों के लिये प्रस्थान करते हैं। यह छड़ी मुवारक पद यात्रा सभी मुख्य पड़ावों जो की श्री बर्फानी बाबा जी की पवित्र गुफा के रास्ते में पड़ते हैं एक–एक रात्रि रूकती है और उस पवित्र स्थल पर सुवह पूजा–अर्चना करने के वाद सुबह–सुबह ही आगे के लिये प्रस्थान करती है। यह छड़ी मुबारक रक्षाबन्धन के दिन सुबह–सुबह पवित्र स्थान पँचतरनी से पूजा–अर्चना के बाद भोले बाबा श्री अमरनाथ जी की पवित्र गुफा की ओर प्रस्थान करती है। पँचतरनी से पवित्र गुफा का यह ६ किलो मीटर का सफर तय करने के बाद गुफा के कदमों में पँहुचने पर इस छड़ी मुबारक का स्वागत वेद मंत्रो और पूजा–अर्चना से किया जाता है। छड़ी मुबारक के पवित्र गुफा में पहुँचने पर वहाँ प्राकृतिक रूप से वने हुए हिम पीठों

के पास इस शिव–शक्ति की प्रतीक पवित्र छड़ी मुबारक को वेद–मंत्रो, श्री गणेश जी की स्तुति व भोले बाबा श्री अमरनाथ जी व भवानी माँ पार्वती की स्तुति के साथ स्थापित किया जाता है। महन्त श्री दिपेन्द्र गिरि जी महाराज सभी साधुओं, श्रद्धालुओं व भक्त जन जोकि छड़ी मुबारक के साथ आए होते हैं पवित्र छड़ी मुबारक, शिवलिङ्ग. व पीठों की पूजा करते हैं और श्राइनबोर्ड द्वारा दीगई सामग्री को प्रसाद के रूप में सभी भक्त जनों व साधुओं में बांटते हैं। इसके वाद प्रसाद पान करने के वाद यात्रा सम्पन्न मानी जाती है। रक्षाबन्धन वाले दिन ही यह पवित्र छड़ी यात्रा जम्मू कश्मीर की सरकार की देख–रेख में कड़े सुरक्षा प्रबन्धों में वापस पँचतरणी पहुँचती है। क्योंकि सुरक्षा का भार जम्मू कश्मीर व केंद्रीय सरकार पर ही होता है। पचँतरणी में रात को विश्राम के बाद यह पवित्र छड़ी मुबारक यात्रा दूसरे दिन सुवह वापस पचँतरणी से श्रीनगर के लिये प्रस्थान करती है।

व्यवस्था व सुविधाएँ

श्री अमरनाथ जी श्राईनवोर्ड की ओर से हर कैंप की देख–रेख के लिये एक–एक निर्देशक नियुक्त किया जाता है जिस की देख–रेख में दूसरे कार्याध्यक्षों के साथ अच्छे सम्वन्ध स्थापित करके श्री अमर नाथ जी श्राईनबोर्ड के निर्देशानुसार यात्रा पड़ावों का काम अच्छी तरह से चलाया जाता है।

महान भारत वर्ष के सभी तीर्थों में श्री अमरनाथ बर्फानी बाबा जी की पवित्र गुफा की यात्रा करना पूर्व काल में अति

कठिन थी। अब यह यात्रा चन्दनबाड़ी व बालटाल तक गाड़ियों में की जा सकती है। चन्दनबाड़ी से आगे की यात्रा पैदल, घोड़ो व पालकियों द्वारा की जासकती है। बालटाल से आगे की यात्रा हैलीकॉप्टर से की जा सकती है। प्राचीनकाल में यात्रा का रास्ता वड़ा कठिन था और सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थी। अव यह रास्ता जम्मू कश्मीर व केद्रिंय महान भारत सरकार की सहायता से काफी हद तक अच्छा वना दिया गया है और इसको और भी अच्छा वनाने की कोशिशें की जा रही हैं।

राज्य सरकार ने महान भारत सरकार ने पुलिस, सेंट्रल रिज़र्व पुलिस बल, अर्ध सैनिक बल, सैनिक बल व सुरक्षा बल यात्रियों की सुरक्षा व सहायता के लिये लगाए होते हैं। और मौसम की जानकारी के बाद ही यात्रियों को यात्रा करने की अनुमति दी जाती है। हर पड़ाव पर सुविधा शिविर है और खाने–पीने रहने–सहने के प्रबन्ध होते हैं। चिकित्सा के सभी प्रबन्ध किये गये होते हैं और संकटकाल में व जरूरत पड़ने पर यात्रियों को स्थानन्तर करने की व ठहरने की व्यवस्थाएँ उपलब्ध होती हैं।

यात्रियों के ठहरने के लिये व भोजन आदि के सभी निशुल्क प्रबन्ध भन्डारे वालों ने किये होते हैं। इसके अतिरिक्त जो कोई किराये पर रहने के लिये टेन्ट, हट आदि लेना चाहते हों तो वह भी उपलब्ध होते हैं। कम्बल आदि भी निशुल्क मिल जाते हैं। साधुओं को सर्दी से बचने के लिये निशुल्क लकड़ी जलाने के लिये दी जाती है। टैलीफोन का भी व्यापक प्रबन्ध होता है। प्रसाद आदि भी उपलब्ध होता

है। सफाई व स्वच्छ वातावरण रखने के लिये खास ध्यान दिया जाता है।

सूचना विभाग की ओर से ध्वनि वर्धक यत्रों (Loud Speakers) की व्यवस्था की होती है ताकि किसी यात्री को परेशानी की हालत में अपने दूसरे साथी यात्रियों व दूसरी किसी किस्म की सूचना देनी है देसकें।

पवित्र गुफा शिवर स्थल पर व सभी पड़ावों शिविरों पर प्रकाश के प्रबन्ध बिजली विभाग द्वारा किये होते हैं।

सुलभ विभाग की ओर से यात्रा मार्ग में यात्रियों की सुविधा के लिये शौचालय व हर पड़ाव पर स्नानागार व शौचालय भी बनाए गये होते हैं। सुलभ कर्मचारियों द्वारा इन की सफाई की जाती है और उन की सफाई का बिशेष ध्यान दिया जाता है। यात्रा मार्ग व हर पड़ाव पर सफाई के खास प्रबन्ध होते हैं। पवित्र गुफा के भीतर भी सफाई के खास प्रबन्ध किये होते है और श्रद्धालु भी मर्जी से इस पवित्र गुफा की सफाई आदि, सदभावना से करते हैं।

शुद्ध व ताजा पीने का पानी हर पड़ाव पर उपलब्ध होता है और पवित्र जल को पान करने से मन अति प्रसन्न होता है।

सामान आदि रखने के लिये हर पड़ाव पर बोझागार (Lockers) उपलब्ध होते हैं ताकि यात्री अपने सामान को सुरक्षित रख सकें।

जोड़े व जूते रखने के लिये (जूता घरों) पदत्राण कक्षों

का प्रबन्ध किया गया होता है। यात्रियों की सुविधा के लिये प्रसाद का खास प्रबन्ध किया गया होता है।

निजी प्रसाद भंड़ारों से भी प्रसाद उपलब्ध होता है।

अति शीत हो जाने पर रात को जलाने के लिये ईंधन भी उपलब्ध होता है। हर पड़ाव पर चिकित्सा उपलब्ध होती है। यात्रियों की सहायता, सहूलियत व सुरक्षा के कड़े प्रबन्ध किये होते हैं और कर्मचारी किसी भी स्थिति से निबटने के लिये तैयार रहते हैं।

यात्रियों के करने योग्य व न करने योग्य जानकारियाँ

करने योग्य जानकारियाँ

१. यात्रा करने के पूर्व पंजीकरण करवालें । पंजीकरण करवाना जरूरी है।

२. चिकित्सक से अपने स्वास्थ्य की जांच अवश्य करवालें। यात्री शारीरक व मानसिक रूपसे यात्रा करने योग्य होना चाहिए क्योंकि यात्रा १३५०० फीट की ऊँचाई की है और पवित्र गुफा के पास ऑक्सीज़न (Oxygen) की कमी रहती है।

३. यात्रा प्रारम्भ करने से पूर्व अपने साथ गर्म कपड़े सलीपिंग वैग, टोपी, दस्ताने, बरसाती, वूट, टार्च और चलने के लिये डण्डा अवश्य साथ रखें।

४. स्त्रियों का सम्मान करें। स्त्रियों के लिये सलवार व गर्म कपड़े पहनना ही अच्छा है, कपड़े हवा निरोधक व बाटरप्रूफ

होंतो बड़ी अच्छी बात है। साड़ी का प्रयोग न करें क्योंकि सर्दी अधिक होती है।

५. यात्रा के दौरान, कुछ खाने–पीने का सामान बिस्कुट, पानी की बोतल, दूध पाऊडर, चीनी, फ्रूट, आदि साथ रखें व सूंघने के लिये कपूर, चेहरे पर लगाने के लिए क्रीम आदि साथ रखें, क्योंकि मौसम सर्द होता है। सर्दी वहुत होती है और मौसम शुष्क होने के कारण चेहरा फट भी सकता है।

६. मार्ग में निजी दुकानों से भी सामान उपलब्ध होता है। इस लिये सामान खरीदने के लिये धन–राशी अवश्य अपने साथ रखें।

७. धन–राशी वा कीमती सामान जो अपने साथ लाए हों को सम्भाल के अपने ही पास रखें। चोरी भी हो सकता है।

८. यात्रा अधिकारियों के द्वारा समय–समय पर सूचनाएँ दी जाती हैं। उन सूचनाओं का पालन करें और सूचनाओं का पालन करते–करते ही यात्रा तय करें।

६. स्वास्थ्य व चिकित्सा सुविधाएँ मार्ग में व पड़ावों पर निशुल्क उपलब्ध हैं, परन्तु यात्री अपने साथ स्वास्थ्य सम्वंधी सामान अवश्य साथ रखें।

१०. चेतावनी वाले स्थानों व तंग रास्तों पर सावधनी से चलें व सादे आम सुविधा जनक मार्ग पर से ही सफर तय करें।

११. पुण्य कार्य करना ही हमारा धर्म है। सद्भावना रखें

और दूसरे यात्रियों की सहायता करें। सदा भोले बाबा जी के जयकारे लगाते हुए व सत्य निष्ठा से यात्रा करें।

१२. याद रखें कि यदि टट्टू, पालकी आदि किराय पर लिया हो, पिट्ठू वाला किया हो तो बह प्रमाणित हो और इन्हें साथ–साथ रखें।

१३. सभी भारतवासियों के हृदय में मातृत्व के सम्मान की भावनओं का निर्माण करें। राष्ट्र की एकता व अखण्डता की रक्षा करें। राष्ट्र ध्वज व राष्ट्र गान व राष्ट्रीय धरोहरों का आदर करें।

१४. प्राकृतिक पर्यावरण जिसके अंतर्गत वन, नदियाँ, सरोवर व जीव जन्तु आदि आते हैं, की रक्षा करें और हर प्राणी के लिये दया भाव रखें।

१५. याद रखें कि वृक्ष तेज धूप को सह कर अपनी छाया से विश्रामियों को शितलता व सुख पहुँचाते हैं। दीपक जल कर दूसरों को प्रकाश देता है। परोपकार करने बाले मानव इस ससांर में भी खुश रहते हैं और मरने के वाद भी।

न करने योग्य जानकारियाँ

१. यात्रियों को पंजीकरण प्रमाण पत्र के विना यात्रा नहीं करनी चाहिए। प्रमाण पत्र के विना यात्रा की अनुमति में वाधा भी पड़ सकती है।

२. ढलान बाले मार्गों से यात्रा न करें। ऐसे रास्ते दुखदाई भी हो सकते हैं।

३. सरकने वाली चट्टानों व सरकने वाली बर्फ की चट्टानों के पास नहीं रूकें। बर्फिले मार्गों व हिम नदियों को जल्दी व सावधानी से पार करें, देर न लगाएँ।

४. टट्टू वाला, पालकी वाला, व पिट्ठू वाला यदि किया होतो विना प्रमाण पत्र के नहीं होना चाहिए और पैसे मूल्य से ज्यादा न दें।

५. यात्रा मार्ग में गन्दगी नहीं डालें। शौचाल्यों में ही शोचादि करें व कूड़ादानों के अतिरिक्त दूसरे स्थानों में कूड़ा–कर्कट नहीं फैंके क्योंकि दुर्गन्ध से विमारी फैलने व बीमार होने के आसार होते हैं।।

६. यात्रा करते समय राजनीति की बातें नहीं करें और दूसरे समुदाय के लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाएँ। राग–द्वेष ही हिंसा का व पाप का घर है, यह अच्छा नहीं। सदा जोड़ने की भावना रखो, तोड़ने की नहीं।

७. यात्रा निर्धारित समय के वाद नहीं करें, हानिकारक भी हो सकती है।

८. दुर्बल, क्षीण, रोगी, वृद्ध, यात्रा नहीं करें यात्रा में कोई भी घटना हो सकती है। शरणागत की सहायता नहीं करना अधर्म है।

९. यात्रा करते समय कानूनी नियमों का उलङ्घन नहीं करें, कानूनी व्यवस्था बनाए रखें, हिंसा से दूर रहें।

१०.भन्डारों में खाना खाते समय खाना जरूरत से ज्यादा नहीं लें। झूठन न छोड़ें।

भजन

शंकर तेरी लीला न्यारी।
तुम हो भक्तन के हितकारी।।
शंकर तेरी लीला न्यारी।
तुम हो भक्तन के हितकारी।।

शंकर तेरी लीला न्यारी।
गल में रूँडन माला साजे।।
हथ, डम, डम, डम, डमरू बाजे।
दीन जो माँगे वही फल पाए।।

शंकर तेरी लीला न्यारी।
तुम हो भक्तन के हितकारी।।
शंकर तेरी लीला न्यारी।
तुम हो भक्तन के हितकारी।।

मथंन का विष 'विष्णु' शंकर।
घट, घट करके पी डाला।।
संकट सवके क्षण में हरके।
नील कँठ कहलाए ।।

शंकर तेरी लीला न्यारी।
तुम हो भक्तन के हितकारी।।
शंकर तेरी लीला न्यारी।
तुम हो भक्तन के हितकारी।।

भजन

भोले भंडारी बाबा तुम्ही हो।
एक ज्ञान का घूँट पिला दे।।
दबका दल–दल माया में तेरी।
अपने यंत्र से कंचन बनादे।।

भोले भंडारी बाबा तुम्हीं हो।

सारे जग के महादेव तुम हो।
सबके कष्ट हैं तुम ने निबारे।।
बेड़ा मेरा भी अव पार करदे।
हर–हर गाँऊ मैं तेरे द्वारे।।

भोले भंडारी बाबा तुम्हीं हो।

'विष्णु' करूना के सागर तुम्ही हो।
तुम ही शिव हो सव के सँहारे।।
विद्या ऐसी मुझे अब दे दो।
जिस से भक्त हैं तुमने तारे।।

भोले भंडारी बाबा तुम्ही हो।
एक ज्ञान का घूँट पिला दे।।
दबका दल–दल माया में तेरी।
अपने यन्त्र से कंचन बनादे।।

ॐ नमः शिवायः

भजन

बम भोले, बम भोले, बम भोले बोल।
मिट्ठे यह बोल सारे और अनमोल।।
कट जाएँ पाप सारे लागे न मोल।
बम भोले, बम भोले, बम भोले बोल।।

बम भोले, बम भोले, बम भोले बोल।
शंकर वड़े दयालु 'विष्णु' जपे त्रिलोक।।
आप रहें सूने में, बसती में लोक।
बम भोले, बम भोले, बम भोले बोल।

बम भोले, बम भोले, बम भोले बोल।
जटा–जूट गङ्ग.ा वराजे, हथत्रिशूल।।
नंदी दी सवारी ईंदी, गणेश, गौराँ कोल।
बम भोले, बम भोले, बम भोले बोल।।

बम भोले, बम भोले, बम भोले बोल।
शरण जेड़ा ईंदी आंए पटारी दिंदे खोल।।
बम भोला बोलदे जाए भरी दिंदे चोल।
बम भोले, बम भोले, बम भोले बोल।



भजन

जपता जा, जपता जा।
मन रे तू भी जपता जा।।
ॐ नमः शिवायः
ॐ नमः शिवायः

जपता जा, जपता जा।

महाँ मन्त्र, महाँ मन्त्र।
प्यारा तू भी जपता जा।।
ॐ नमः शिवायः
ॐ नमः शिवायः

जपता जा, जपता जा।

छट अक्षरी, छट अक्षरी।
महाँ मन्त्र तू भी जपता जा।।
ॐ नमः शिवायः
ॐ नमः शिवायः

जपता जा, जपता जा।

सुख में गा, दुख में गा।
श्रद्धा से तू जपता जा।।
ॐ नमः शिवायः
ॐ नमः शिवायः

जपता जा, जपता जा।

भजन

बम भोले, बम भोले मनमें वसाऊँ।
शिव, शिव भजता, नचता गाऊँ।।
दौड़े–दौड़े दर पै आऊँ।
चरणों की मैं धूल लगाऊँ।।

बम भोले, बम भोले मनमें वसाऊँ।

माथा शिव को खूब निवाऊँ।
पत्र पुष्प भेंट चढाऊँ।।
आरती शिव की मन से गाऊँ।
दर्शन हिम शिव 'विष्णु' पाऊँ।।

बम भोले, बम भोले मनमें वसाऊँ।

मोह माया को मनसे भगाऊँ।
जयकारे मैं शिव के लगाऊँ।।
गङ्गा अमर में मलके नहाऊँ।
शिव ही शिव मैं होजाऊँ।।

बम भोले, बम भोले मनमें वसाऊँ।



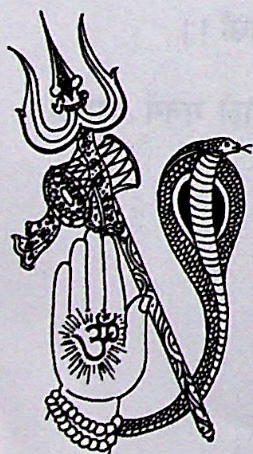
भजन

जय शिव भोले शंकर जटा धारी।
सकल प्रार्थनाएँ करो पूर्ण हमारी।।
ब्रह्मा–विष्णु सदा शिव तुम।
त्रिमूर्ति धारी, त्रिमूर्ति धारी।।
बाएँ अङ्ग. में गौराँ विराजे।
भोले भंडारी, भोले भंडारी।।

जय शिव भोले शंकर जटा धारी।

जय शिव भोले शंकर जटा धारी।
सर्व मनोरथ पूर्ण करते।।
'विष्णु' त्रिपुरारी, 'विष्णु' त्रिपुरारी।
सच्चे मनसे जो भी ध्याए।।
नर–नारी, नर–नारी।
जय शिव भोले शंकर जटा धारी।।

जय शिव भोले शंकर जटा धारी।



भजन

रंगले, रंगले, धूल रंगले।
भोले बाबा के चरणों की धूल रंगले।।
जिस रंग में रंग गई थी गौराँ।
उस रंग में तू भी मन रंग ले।।

रंगले, रंगले, धूल रंगले।
भोले बाबा के चरणों की धूल रंगले।।
जिस रंग में रंग गई थी राधा।
उस रंग में तू भी मन रंग ले।।

रंगले, रंगले, धूल रंगले।
भोले बाबा के चरणों की धूल रंगले।।
जिस रंग में रंग गई थी मीरां।
उस रंग में तू भी मन रंग ले।।

रंगले, रंगले, धूल रंगले।
भोले बाबा के चरणों की धूल रंगले।।
जिस रंग में रंग गई थी शबरी।
उस रंग में तू भी मन रंग ले।।

रंगले, रंगले, धूल रंगले।
भोले बाबा के चरणों की धूल रंगले।।

भजन

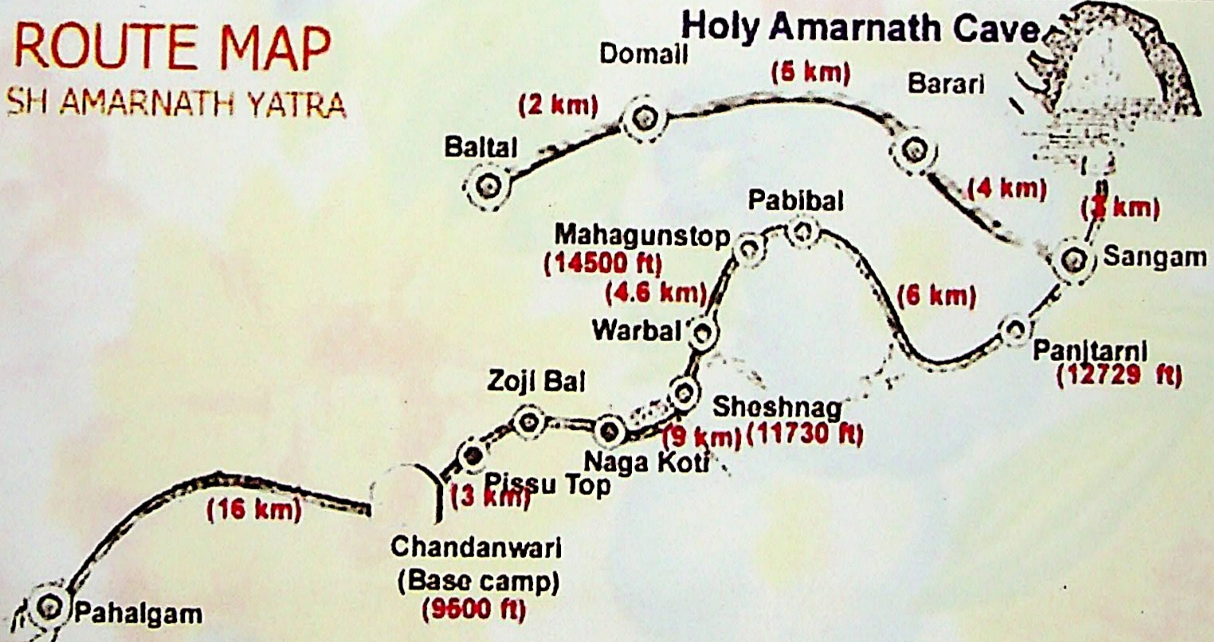
है रसना काम तेरा नाम हरि का जपना।
छोड़ दे लेना छट रसों के सुख का सपना।।
हो अशं विशेष मुख में विराजने वाली।
मधुर उच्चारण करना मत करना कसैली।।

है रसना काम तेरा नाम हरि का जपना।
छोड़ दे लेना छट रसों के सुख का सपना।।
अमृत सा बोलो झरणा अमृत वढ़ता ही जाए।
वाणी हो ऐसी जो मरूस्थल में भी फूल खिलाए।।

है रसना काम तेरा नाम हरि का जपना।
छोड़ दे लेना छट रसों के सुख का सपना।।
वोलना ऐसा कहीं यह फिसल न जाए।
शील कहते–कहते अशलील निकल न पाए।।

है रसना काम तेरा नाम हरि का जपना।
छोड़ दे लेना छट रसों के सुख का सपना।।
सुवचन ही मन बुद्धि को पवित्र करजाएँ।
आत्मा आनन्दित हो और भी आनन्द पाएँ।।

है रसना काम तेरा नाम हरि का जपना।
छोड़ दे लेना छट रसों के सुख का सपना।।
अग्रभाग पर इसके जो हरि नाम हैं रखते।
गङ्गा, गया, काशी में 'विष्णु' स्नान हैं करते।।


ROUTE MAP
SH AMARNATH YATRA
Holy Amarnath Cave
Domail
(5 km)
Barari
(2 km)
Baltal
(4 km)
Pabibal
Mahagunstop
(14500 ft)
Sangam
(4.6 km)
(6 km)
Warbal
Panjtarni
(12729 ft)
Zoji Bal
Sheshnag
(9 km) (11730 ft)
Naga Koti
Pissu Top
(3 km)
(16 km)
Chandanwari
(Base camp)
(9600 ft)
Pahalgam

।।श्री शिवजी की आरती।।

ओ३म् जय शिव, ओंकारा स्वामी हर शिव ओंकारा।
ब्रह्म विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा।।
ओ३म् जय।।

एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजे।।
ओ३म् जय।।

दो भुज चार चतुर्भज दश भुज ते सोहे।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे।।
ओ३म् जय।।

अक्षमाला बनमाला रूण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद चन्दा, भाले शुभकारी।।
ओ३म् जय।।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे।।
ओ३म् जय।।

कर मध्यें कमंडलु चक्र त्रिशूल धर्ता।
जगकर्ता, जगहर्ता, जगपालन करता।।
ओ३म् जय।।

ब्रह्म विष्णु सदाशिव जानत अविवेका
प्रणवाक्षर (ॐ) मध्ये, यह तीनों एका।।
ओ३म् जय।।

त्रिगुण शिव की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछित फल पावे।।
ओ३म् जय।।

jandiyal printing press - 2553140